ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

चेत-वैसाख, संवत् नानकशाही ५४१-४२

अप्रैल 2010 वर्ष ३ अंक ८

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए., एम. एम. सी.*

सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव

धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग **303** संपादन विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

अंम्रितु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥
जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ तिखा बुझाई ॥
करि सेवा पारब्रहम गुर भुख रहै न काई ॥
सगल मनोरथ पुंनिआ अमरा पदु पाई ॥
तुधु जेवडु तूहै पारब्रहम नानक सरणाई ॥ *(पन्ना ३१८)*

पंचम गुरु, श्री गुरु अरजन देव जी राइ कमालदी मोजदी की वार में दर्ज इस पावन पउड़ी के द्वारा मनुष्य-मात्र को संसार में रहते हुए परमात्मा के अमृत रूप सच्चे नाम से जुड़ कर मनुष्य-जन्म का दुर्लभ अवसर सफल करने का गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि ऐ भाई! परमात्मा का नाम अमृत रूपी खजाना है और इस खजाने में से तू भी अपने मनुष्य-जन्म रूपी अमूल्य अवसर के दौरान अमृत रस को पान कर। गुरु जी का मनुष्य-मात्र को किया गया यह आग्रह इस प्रसंग में पूर्णतः अनुकूल तथा सर्वकल्याणकारी उद्देश्य की पूर्ति करता प्रतीत होता है। जहां सांसारिक माया के अनावश्यक प्रभाव में मायावादी मनुष्य जीवन भर अपने उद्देश्य को नहीं समझता वहां सर्वसाधारण मनुष्य भी अपने दुनियावी फर्जों की पूर्ति को ही सम्मुख रखता हुआ अधिक से अधिक अपने परिवार तक ही सोचता है। अतः मनुष्य-मात्र दुख के चक्र में ही प्रभु-नाम से दूर ही रहता है। इस उपलक्ष्य में गुरु जी का कथन है कि परमात्मा का नाम ऐसा है जिसका स्मरण करने से सुख पाया जाता है और सारी लालसाएं अथवा सांसारिक इच्छाएं संतुष्ट हो जाती हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि हे भाई! तू यदि गुरु की सेवा में लग जाए, उसकी शरण में आ जाए तो तू परमात्मा से नाता स्थापित कर सकता है, फिर तुझे कोई दुनियावी भूख शेष न रह जाएगी। परमात्मा का नाम ऐसा निर्मल एवं सक्षम है कि नाम-स्मरण करने से सभी उद्देश्य पूरे हो जाते हैं और ऐसा करने वाले सदीवी सम्माननीय ऊंची अध्यात्मिक अवस्था को प्राप्त होते हैं। अंत में गुरु जी कथन करते हैं कि हे परमात्मा! अपने जैसे आप स्वयं ही हो अथवा आपके समान कोई अन्य हस्ती जगत में विद्यमान नहीं है, इसलिए हम सब को उसी का सहारा लेना चाहिए। इसी में हमारे मनुष्य-जन्म की सफलता विद्यमान है।

आओ! खालसा पंथ के साजना दिवस पर खालसा पंथ में शामिल होकर निर्भीक सिंघ-सिंघनियां बनें!

हजारों वर्षों से पराधीनता की जंजीरों में जकड़े अनेक प्रकार के भ्रमों तथा कर्मकांडों के चक्रव्यूह में फंसे लोगों की मानसिक तथा आत्मिक कायाकल्प करते अकाल पुरख की महान इच्छा को रूपमान करते हुए पहले गुरु श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने सिक्ख पंथ को रूपमान किया। कायाकल्प को सुदृढ़ करने के लिए अकाल पुरख की ही महान इच्छा के अनुरूप गुरु जी के बाद सिक्ख पंथ को रूहानी ज्योति से अध्यात्मिक और नैतिक अगुआई प्राप्त होती गई। दशमेश पिता साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के गुरगद्दी काल में समस्त संसार ने अत्यंत विस्माद तथा आश्चर्य के भाव के साथ सिक्ख पंथ को खालसा पंथ रूपी शिखरता की मंजिल पर पहुंचे हुए देखा। यह विलक्षण कारनामा श्री अनंदपुर साहिब की पावन धरती पर घटित हुआ।

तत्कालीन मुगल बादशाह औरंगजेब का मुगल राज जुल्म तथा अन्याय की सभी सीमाएं पार कर चुका था। श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज की सन् १६७५ ई में दिल्ली में शहीदी से हकूमत द्वारा हिंदुओं को जबरन मुसलमान बनाने की सरकारी मुहिम में अंतर आने के बावजूद भी शासकों-प्रशासकों का बहुआयामी जब्र निरंतर जारी था और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने चुनिंदा जांबाज सिक्खों सहित श्री अनंदपुर साहिब पर किये आक्रमणों का मुंहतोड़ जवाब देते आ रहे थे। सिक्ख पंथ को और अधिक बलवान, साहसी तथा जुर्रत के धारक बनाने हेतु, अन्याय व जुल्म-जब्र करने वालों को अधिक जोरदार टक्कर देने के लिए अकाल पुरख की असीम शक्ति से एकरूप गुरु जी ने सन् १६९९ ई की वैसाखी वाले दिन सिक्ख संगत को श्री अनंदपुर साहिब अधिक से अधिक संख्या में गुरु दरबार में हाजरियां भरने के लिए आदेश भेज कर बुलाया। गुरु-आदेश पर हजारों की संख्या में सिक्ख संगत उपस्थित हुई। गुरु जी ने सजे दीवान में कृपाण की धार पर पूर्णत: जांच-परख कर इस दिन सिक्ख संगत के सामने पांच सिक्खों को 'खालसा' सजाकर खालसा पंथ की नींव रखी और पांचों को 'पांच प्यारे' नाम दिया। यह अकाल पुरख की महान इच्छा तथा हुक्म बरत रहा था कि ये खालसा सजे पांचों सिंघ जहां समस्त देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये थे वहां ये सदियों से चली आ रही जाति प्रणाली के मद्देनजर विभिन्न जातियों से भी संबंधित थे। खालसा सजने के बाद इनकी कोई जाति न रही बल्कि ये 'खालसा' हो गए। खालसा साजना के इस दिन गुरु जी ने यह ऐलान ऊंचे स्वर में किया। यह स्मरण रहे कि मुख्यत: यह जाति प्रणाली व्यवस्था ही देश के जनसाधारण में उत्पन्न हो रहे मतभेदों के लिए जिम्मेवार

थी। गुरु जी ने इस दिन जुड़ी समूह संगत के सामने कहा कि ये मेरे पांच प्यारे हैं। ये 'पांचों' समूह रूप में 'गुरु' का रुतबा रखेंगे। इस बात का सर्वप्रथम व्यवहारिक प्रमाण जुड़ी संगत ने उसी वक्त स्वयं उपनी आंखों से देखा जब गुरु गोबिंद राय जी ने इन पांच प्यारों को पूर्णत: सनम्र भाव में विनती की कि "अब मुझे भी खंडे-बाटे का अमृतपान करायें, ताकि मैं भी गोबिंद राय से गोबिंद सिंघ कहला सकूं" और ऐसा ही हुआ। तब उसी दिन हजारों की संख्या में सिक्ख पंथ खालसा पंथ में परिवर्तित हुआ, बाणी और बाणे का धारक बना तथा हकूमती अन्याय का सीधा स्पष्ट सामना करने का संकल्प इस खालसा पंथ ने लिया। भले ही जुल्म व अन्याय का विरोध तथा सामना चिरकाल से सिक्ख पंथ करता चला आ रहा था परंतु खालसा पंथ की साजना होने के बाद जुल्म व अन्याय का विरोध अत्यधिक ऊंचे साहस, मनोबल और उत्साह के साथ होने लगा। खालसे को रंचिक मात्र भी मृत्यु का भय न रहा। उनकी रग-रग में अमृत संचारित हो गया। 'अमृत' का भाव ही 'मृत्यु से रहित' होना है। वास्तव में मृत्यु का भय ही है जो इंसान को बहुत बार कई प्रकार का अन्याय सहन किये जाने के लिए विवश करता है और उसकी जद्दोजहद को धीमी करता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने अपने खालसे, अपने सिंघों में से यह भय बिल्कुल ही निकाल दिया। तभी वे एक अत्यंत गौरवशाली इतिहास रचने के सक्षम हुए। उन्होंने उन जालिमों के छक्के छुड़ा दिये जो जुल्म की इंतहा कर रहे थे। गुरु जी के आशीर्वाद से माधोदास वैरागी से खालसा सजे बाबा बंदा सिंघ बहादर और उनके साथी सिंघों ने उनका मलियामेट कर दिया। इसी प्रसंग में सिक्ख पंथ बाबा बंदा सिंघ बहादर और उनके साथी सिंघों द्वारा मई १७१० में की गई सरहिंद फतह की ऐतिहासिक घटना की स्मृति में 'सरहिंद फतह दिवस' की तीसरी शताब्दी १२, १३ और १४ मई, २०१० को मनाने जा रहा है। बाबा बंदा सिंघ बहादर और उनके साथी सिंघ यह ऐतिहासिक विजय इसी लिए प्राप्त करने में सक्षम हुए क्योंकि वे अमृतधारी खालसे थे, वे निर्भीक सिंघ थे, उनके दिलों में शहीद होने का रंचिक मात्र भी भय नहीं था, वे मरजीवड़े थे, उनका मन, उनकी आत्मा गुरु जी तथा अकाल पुरख की असीम शक्ति से प्रेरणा प्राप्त कर रही थी। आज भी देश में कई प्रकार का अन्याय और जुल्म जारी है। इस अनचाहे बरतारे को खालसा पंथ के और व्यापक होने से अवश्य विराम लग सकता है। देश में अभी भी जाति प्रणाली के आधार पर चले आ रहे भेदभाव और पक्षपात को विराम देने में भी यह अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकता है। इसके लिए आवश्यक है उसी मनोभाव से खालसा बनने तथा सिंघ व सिंघनियां सजने की जिस मनोभाव से सन् १६९९ की वैसाखी वाले दिन खालसा पंथ की साजना हुई थी।

खालसा पंथ में "पंच-प्रधानी प्रथा"

-डॉ. रछपाल सिंघ*

सिक्ख धर्म में "पांच प्यारों" का महत्वपूर्ण स्थान है, इसी लिए "पंच-प्रधानी प्रथा" प्राचीन काल से ही चली आ रही है। भाई काहन सिंघ नाभा ने 'महान कोश' *(पन्ना ७९१)* में श्री गुरु अरजन देव जी के पांच प्यारों के नाम भाई बिधी चंद जी, भाई जेठा जी, भाई लंगाह जी, भाई पिराणा जी और भाई पैड़ा जी बताए हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि जब बादशाह जहांगीर ने श्री गुरु अरजन देव जी को लाहौर बुलाया था उस समय गुरु जी के साथ भाई बिधी चंद जी, भाई जेठा जी, भाई सालो जी, भाई पिराणा जी और भाई पैड़ा जी भी थे। श्री गुरु तेग बहादर जी के पांच प्यारों के नाम थे: भाई माती दास जी, भाई गुरदित्ता जी, भाई जैता जी, भाई ऊधा जी और भाई दयाला जी। गुरु जी पांच प्यारों को अपने साथ ही रखते थे। श्री गुरु तेग बहादर जी दिल्ली जाते समय भी इन पांच प्यारों को साथ लेकर गए थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा साजे पांच प्यारों के नाम इस प्रकार हैं : भाई दया सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी, भाई हिम्मत सिंघ जी, भाई मोहकम सिंघ जी और भाई साहिब सिंघ जी। गुरु जी ने खंडे-बाटे का अमृत छकाकर इन पांच प्यारों को अपना खास रूप दिया और इनको "अकाल पुरख की फौज" कहा। इतना ही नहीं, महाबली, संत, बादशाह-दरवेश गुरु जी ने खुद अपने हाथ फैला कर इन पांचों से खंडे-बाटे के अमृत की दात प्राप्त की और *"आपे गुरु चेला"* कहलाए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को चमकौर की गढ़ी छोड़ने का हुक्म जिन पांच प्यारों ने सुनाया, उनके नाम थे : भाई दया सिंघ जी, भाई मान सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी, भाई संगत सिंघ जी, भाई संत सिंघ जी। *(गुरमति मारतंड, पृष्ठ ६९४)* गुरु जी ने पांच प्यारों को खालसे की संज्ञा देकर ऐसे फरमान किया :

खालसा मेरो सतिगुर पूरा।
खालसा मेरो सजन सूरा।
खालसा मेरो पिंड परान।
खालसा मेरी जान की जान। (सरब लोह ग्रंथ)

एक ऐसा अवसर आया जब दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जानबूझ कर खालसे की परिपक्वता की परख करने हेतु संत दादू की समाधि (राजस्थान) को 'तीर' से नमस्कार की। गुरु जी का पावन हुक्म है कि किसी कब्र, मढ़ी आदि को नहीं मानना। तो सिंघों ने गुरमता किया। "पंच-प्रधानी प्रथा" अथवा पांच प्यारों ने गुरु जी को तनखाह लगाने का फैसला सुना दिया। उन्होंने गुरु जी को 'तनखाहीआ' कह कर १२५ रुपए का दंड लगाया। *(गुरु कीआं साखीआं, पृष्ठ १८१)* गुरु जी ने बड़ी प्रसन्नता से सिक्खी सिद्धांतों की पालना करते हुए इसको प्रवान कर लिया, इसलिए कि आने वाली पीढ़ियों को "पंच-प्रधानी प्रथा" की सर्वोच्चता और सर्वशक्तिमानता के बारे में संदेह न रह जाये।

विश्व भर के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी गुरु ने अपने शिष्य को अपने

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केन्द्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१*

जैसा बना कर माथा टेका हो। यह विलक्षण मर्यादा केवल सिक्ख धर्म में ही है। श्री गुरु नानक देव जी से लेकर दसवें पातशाह तक यही परंपरा कायम रही। इतना ही नहीं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने सिक्खों को उच्च बनाकर, उनकी प्रशंसा जी भर कर की। अपना तन, मन, धन सभी कुछ खालसा जी को समर्पित कर दिया। आपका पावन फरमान है :

जुद्ध जिते इनही के प्रसादि,
इनही के प्रसादि सुदान करे ॥ . . .
इनही की क्रिपा के सजे हम हैं,
नही मो सो गरीब करोर परे ॥

इस प्रकार गुरु जी ने खालसे को देग-तेग अथवा संत-सिपाही का रुतबा देकर पूरी दुनिया से न्यारा बना दिया।

सिक्ख धर्म में नित्य-प्रति की जाने वाली अरदास में पांच प्यारों का सम्मानयोग्य नाम सम्मिलित है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब बाबा बंदा सिंघ बहादर को नांदेड़ (महाराष्ट्र) की धरती से पंजाब की ओर भेजा था तब उसके साथ भी पांच सिंघ भेजे थे। उनके नाम इस प्रकार हैं : बाबा बिनोद सिंघ, बाबा काहन सिंघ, बाबा बाज सिंघ, बाबा भगवंत सिंघ और बाबा कोइर सिंघ।

गुरबाणी में "पंच" पद का प्रयोग व्यापक रूप में हुआ है। पंच का अर्थ है : पांच मुख्य व्यक्ति, पंचायत के मैंबर, पांच माननीय व्यक्ति, संत-जन इत्यादि। गुरमति के अनुसार "पंच-जन" से भाव ऐसे व्यक्तियों से है जो विकारों से रहित, सद्‌गुणों के धारक, सदीवी गुरु-हुक्म में रहने वाले, नाम-बाणी के रसिये, जिनका तन, मन और धन अपने गुरु को समर्पित है। श्री गुरु नानक देव जी ने ऐसे महान पुरुषों को परवाण, प्रधान, दरगाह में सम्मान प्राप्त करने वाले, गुरु के दर पर शोभा पाने वाले, सदीवी गुरु के ध्यान में लिव लगाये रखने वाले कहा है :

पंच परवाण पंच परधानु ॥
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ . . . *(पन्ना ३)*

भाई गुरदास जी ने पंच-जनों को परमेश्वर के सदीव निकट अथवा गुरमुख-जन कहा है :

सनमुखि मिलि पंच आखीअनि
बिरदु पंच परमेसुरु पासी।
गुरमुखि मिलि परवाण पंच
साधसंगति सच खंड बिलासी। *(वार ३९:१७)*

ऐसे पंच-जन जहां बैठकर, मन-चित्त एकाग्र करके प्रभु के गुण गायन करते हैं वहां पर प्रभु जी आप बसते हैं :

इकु सिखु दुइ साध संगु पंजीं परमेसरु।
(वार १३:१९)

खंडे-बाटे का अमृत छकना इस बात का प्रतीक है कि मानव ने आपा-भाव मिटाकर अपना सिर गुरु जी को भेंट करना है। गुरु-प्रेम अथवा गुरु-कृपा किसी भी दुनियावी धन, दौलत, पदार्थों आदि से प्राप्त नहीं की जा सकती। गुरु जी को अपना सभी कुछ अर्पण करके, उसके बदले में "नाम अमृत" की जो प्राप्ति होती है उसी का नाम ही "सिक्खी" है। सिक्खी तो गुरु जी की शिक्षा है, जिसके अनुसार सांसारिक किरत, कार-विहार करते हुए भी प्रभु के नाम में भीगे हुए रहना है; यदि कहीं मन डोलता जाये तो गुरु-शबद का सहारा लेना है। गुरबाणी और नाम-सिमरन में ऐसी सर्वोच्च शक्ति है जो मानवी मन के ऊपर जन्मों-जन्मों की लगी हुई विकारों की घनी मैल उतार कर ऐसा मानवी पलटा करती है कि बड़े-बड़े पापी, पाखंडी और अकृतघ्न व्यक्ति भी उत्तम पदवी को प्राप्त कर जाते हैं।

पंच-जनों अथवा पांच प्यारों का तन, मन

और धन सभी कुछ अपने गुरु को समर्पित होता है। वे श्वास-श्वास प्रभु-हुक्म में कार कमाते हैं इसलिये "पांचों का हुक्म", "गुरु-हुक्म" ही होता है। पांचों में ही परमेश्वर होता है। इसी निरोल परंपरा के अनुसार आज भी गुरु जी के साजे हुए पांच प्यारे जो भी हुक्म सिक्ख जगत के लिए करते हैं वो सभी के लिए मानना जरूरी होता है। इसलिए "पंच-प्रधानी प्रथा" अथवा "पांच प्यारों" का स्थान सिक्ख धर्म में सर्वोच्च अथवा "गुरु" के समान है।

खालसा महिमा

-स. कंवरजीत सिंघ आजाद, दिल्ली

लिया जन्म है खालसे ने तेग में से, तेग रूप है गुरुवर अकाल जी का।
महां काल का जो है काल बना, खालसा अंश है सर्व के काल जी का।
जो अड़े सो झड़े न अटक पाये, शरण परे का बनता रखवाला है जो,
लंगर पका बिठा कर पंक्ति में, रूप धर लेता सर्वपाल जी का।
वही बल, रूप, ज्ञान, अकाल दिया, इसका सदुपयोग ही किया उसने,
हृदय उतना ही बड़ा है इस पाया, हृदय बड़ा है जितना 'विशाल' जी का।
आज्ञा प्रभु की मान सब कुछ सहता, पर सीखा न इसने जुल्म करना,
सिपाही रूप है संत में बदल जाता, पाता अनुभव है जब कृपाल जी का।
बुरा बनने से रोकता स्वयं को यह, कोसों दूर बुराई से रखता है,
नेक नीयत ही इसको रास आये, नेक कर्म करता सद दयाल जी का।
जिसकी जात-पात व कुल नहीं है, जिसका नाम नहीं पर है नाम अधिक,
उस नामी के नाम के साथ जुड़कर, करे नाश वह जाति-जंजाल जी का।
जो रहित में रहे वही खालसा है, नाम जपना नित्य है कर्म जिसका,
जिसका दर्शन पा हो निहाल जाएं, वह तो रूप है नदरि निहाल जी का।
दीन-हीन की करे जो नित्य रक्षा, जरूरत पड़े तो स्वयं को वार डाले,
पक्षपात से रहित बने सर्वरक्षक, रूप पाये वह सर्व बलवान जी का।
रंग लगा है जिसे करतार जी का, अगम अगोचर अपरंपार जी का,
जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होता, खालसा धन्य है पुरख अकाल जी का।
दासों के दासों की दास्तां को, परम पुरख से मांगे जो दास होकर,
रहे सेवक वह होकर अभिन्न हरि से, वह तो रूप है जाहो-जलाल जी का।
सदा विपरन की रीति से रहे न्यारा, अकाल पुरख जी दिया है तेज सारा,
विजय हर मैदान में होती उसकी, रहता हाथ है उस पर कृपाल जी का।
मिलकर मूल में जो है मूल होता, जुड़ डालों से जन्म गंवाये न जो,
दर्शन पाये अनूप के घरि अंतर, निवास होता जब हृदय निर्मलि जी का।
प्रिय अंश है यह अस्धिज जी का, खड़गकेत जगदीश असिपान का यह,
सर्वलोह की तीव्र धार का यह, रक्षक दीनों अनाथों की पाल जी का।
लिया जन्म है खालसा तेग में से, तेग रूप है पुरख अकाल जी का,
तीन भवनों में जिसकी ज्योति जलती, है खालसा गुरु गोपाल जी का।

गुरु-सागर नदी सिक्खी

*-स. सतनाम सिंघ कोमल**

अनंदपुर में उठी, गरजी, गुरु की तेग बोली है।
हकूमत को सुनाना है, जो अंधी है, जो बोली है।
उठो सिक्खो! मुझे सर दो, क्या जीवन बताऊंगी।
जमाना देख कर सोचे, मैं ऐसी बात पाऊंगी।
वक्त ऐसा न माला से, बनेगी बात अब मुश्किल।
निगल जायेगी सूरज को, अंधेरी रात अब मुश्किल।
जिन्होंने खून दे अपना, बचाया है, संवारा है।
कर्ज उन्हीं का सर अपने, अदा कर दें जो भारा है।
झुक नहीं कट गया बेशक, गुरु का सर, खबर सबको।
झुकेगा न, डरेगा न, गुरु का दर, खबर सबको।
नया जीवन, नई सोचें, नया करके दिखाना है।
गुलामी की जंजीरों का, वक्त अब मिटाना है।
तभी फिर गर्म न होगी, कत्लगाह फिर न हो दिल्ली।
शहीदों की चितायें न जलें, गवाह फिर न हो दिल्ली।
मिटे यह वरसों की बोली, उसी का नूर सारे हैं।
उसी की किरत सब हम हैं, गुणों से सब शृंगारे हैं।
उठो, सर दो, अजादी लो, अदा जीने की आयेगी।
सकार्थ हो यहां आना, बहारें जरूर लायेंगी।
उठे सूरे, झुके सर थे, गुरु की तेग के आगे।
परख सिक्खी की थी, निडर थे, गुरु की तेग के आगे।
मिला जीवन नया सब कुछ, गुरु की हर खुशी उनकी।
बने खुद्दार पी अमृत, बुलंदी पे खुदी उनकी।
जो सिर देकर थी ली सिक्खी, रहेगी यह युगों तक।
गुरु सागर, नदी सिक्खी, बहेगी यह युगों तक।
लिखा कोमल से प्रभु उसतति, गुरु! बख्शिश अब देना।
समर्पित हैं सदा उसको, गुरु! आशीष अब देना।

**२४८, अरबन अस्टेट, लुधियाना-०१४१०१०, मो: ९४१७३-७२३४५*

श्री गुरु अंगद देव जी

-श्री सुरजीत दुखी*

भाई फेरूमल त्रेहन खत्री की संतान था।
सुंदर व आज्ञाकारी बालक का 'लहिणा' नाम था।
पिता थे देवी-भक्त और सेवा खूब कमाते थे।
हर वर्ष माता के दरबार में जाते थे।
मुसलमानों का राज्य था, फिरोजपुर के पास गांव था।
चौधरी फेरूमल मध्य दर्जे का धनवान था।
मुसलमान हाकिम के धन छीनने से वह घबराया।
छोड़ा फिरोजपुर को और खडूर साहिब चला आया।
'लहिणा' जी हुए जवान तो पिता जी ने उनका विवाह रचाया।
देवी चंद की बेटी 'खीवी' को बहू घर की बनाया।
दो पुत्रों, दो बेटियों के लहणा जी बाप हुए।
दातू, दासू, बीबी अमरो और अनोखी नाम हुए।
पिता के देहांत के बाद, चौधरी 'लहिणा' कहलाया।
पिता जी की तरह ही इन्होंने भी मान-सम्मान पाया।
पर मन को शांति मिल न पाई, कई बार देवी दरबार गये।
संत मिले कोई ऐसा जिससे मन दुविधा दूर भये।
'जैसी आसा तैसी मनसा', तड़प नित्य बढ़ती जाये।
पूर्ण 'गुरु' के दर्शन करने की लगन बढ़ती जाये।
अमृत वेले भाई जोधे की आवाज कानों में पड़ गई।
गुरबाणी के शबद सुन, रुचि और भी बढ़ गई।
तेल, दीया और बाती तो थी चिंगारी की सिर्फ जरूरत थी।
प्रार्थना की भाई जोधे से, गुरु वो मुझको बतलाओ,
जिसकी यह बाणी तो दिल में मेरे उतर गई।
करतारपुर में रहते हैं, गुरु नानक उनका नाम है।
किरत करनी, वंड छकना, नाम जपना, उपदेश उनका महान है।
देवी-दर्शन संगत के संग अब जब चले लहिणा।
संगत आगे चली गई, रास्ते में करतारपुर उतर गये लहिणा।
कहा संगत से आती बार मुझे यहां से ले लेना।
भाग्य उदय का समय आ गया, अब यह समझ गए लहिणा।
चलते-चलते गुरु नानक के खेतों की ओर बढ़ा।
गंदम के खेत से सरसों निकालते किरतियों को देख लिया।
आगे बढ़कर पूछा एक से, गुरु नानक का अता-पता।
उत्तर उसने दिया जो ऐसा भ्रम-जाल में डाल दिया।
उत्तर था, 'अगर तू पुरखा गुरु नानक दर्शन को आया है।
समझ लो तुमने गुरु नानक जी का दर्शन अब ही पाया है।'
घोड़े पे बिठा लहिणे को साथ पैदल चले स्वयं गुरु नानक
इस तरह चौधरी लहिणा करतारपुर में आया है।
करतारपुर पहुंच पहले भोजन लहिणा जी को करवाया।
'पुरख' कह कर उसको अपने डेरे पे बिठलाया।
दूसरी तरफ जा पोशाक को बदला और सिंहासन सजा दिया।
साथ लाया जो गुरु नानक ही था, पहचान अब पुरख गया।
गुरु नानक जी का सेवक बन, सेवा उसने खूब कमाई।

**३३२/९, गली जट्टां, अंदरून लाहौरी गेट, श्री अमृतसर। मो: ९९१४५३१२२१*

प्रेम, भक्ति और दृढ़ विश्वास की रंगत उसकी काम आई।
संगत देवी-दर्शन कर लौटी, उसने फिर इंकार किया।
गुरु नानक जी के डेरे पर ही, सेवा का संकल्प लिया।
गुरु नानक जी के दो बेटे थे, पर लहिणा ही सेवक बन पाया।
हुकम माना गुरु का हर पल, गुरु-घर की सेवा कमा पाया।
परीक्षा ली जब गुरु नानक जी ने, अपने पुत्र असफल हुए।
निष्काम सेवा और प्रेम में बस पुरख लहिणा ही सफल हुए।
योग्यता ऐसी देखी, उसे ही गुरगद्दी के काबल पाया।
गुरिआई सौंप दी उसको, पुत्र मोह को ठुकराया।
नाम रखा गुरु अंगद देव, सरूप अपना उसे बनाया।
सिक्खों का दूसरा गुरु तभी तो गुरु अंगद देव कहलाया।
खडूर साहिब में आकर, अटूट लंगर को चलवाया।
हर जाति के बश्र ने, पक्ति में ही बैठ भोजन खाया।
जात-पात और छूत-छात के, भेदों को दूर भगाया था।
भ्रम, वहम को दूर किया, पाखंड-भांडा फड़वाया था।
पंजाबी बोली के शुद्ध रूप, गुरमुखी लिपि को प्रचलित किया।
गुरु नानक जी का जीवन, साथ खोज के लिखवाया।
शारीरिक बल की उन्नति को, अखाड़ा भारी बनवाया।
भेज दूर-दूर प्रचारक, सिक्खी का प्रचार कराया।
सती-प्रथा का खंडन कर, पुनर्विवाह का हक दिलवाया।
मलूका जट की शराब छुड़ा, मिरगी का दौरा हटवाया।
शराब छोड़ी रखी जब तक, उसे नहीं दौरा आया।
पी शराब जो तोड़ गुरु-आज्ञा, मिरगी पड़ी जीवन को गंवाया।
संगत को उपदेश दिया, शरण में जो भी आया।
प्रेम, भक्ति, सेवा, दृढ़ता, रहस्य शांति का बताया।
कनफटे एक तपस्वी ने, जब गुरु जी पे तोहमत लगाई।
गुरु जी वहां से चले गए, पर वर्षा फिर भी नहीं आई।
पाखंडी तपे ने बटोरा रुपया बहुत, और यज्ञ भी करवाया।
वर्षा फिर भी नहीं हुई, तब लोगों को गुस्सा आया।
अमरदास जी और सिक्खों ने तब तपे को घसीटवाया।
तपे ने किये की पाई सजा, गुरु-निंदा मुंह से करके।
लौट आये गुरु जी खडूर में, लोगों की मिन्नतें सुन करके।
उपदेश आरंभ हुए फिर से और सबने दर्शन पाए।
अज्ञान अंधेरे मिटवाये, दिलों के अशंके दूर कराये।
गुरु नानक की तरह उन्होंने भी मोहपाश को काट दिया।
अयोग्य समझा अपने लड़कों को, बाबा अमरदास को गुरु किया।
जन-कल्याण सच्चे धर्म का, सब जीवों को उपदेश दिया।
किये श्लोक उच्चारण और बाणी का प्रचार किया।
'दुखी' कहे दुखड़े हर लो, यही पुकार दोहराता है।
शीश झुका समरथ गुरु को, अपना कर्त्तव्य निभाता है।

भारतीय संस्कृति के दरवेश : बाबा फरीद जी

-प्रो हरमहेन्द्र सिंघ*

भारतीय संस्कृति में सूफी परंपरा का बहुत महत्व है। मध्यकालीन संस्कृति का बोध सूफियों के आध्यात्मिक काव्य से जुड़ा हुआ है। ऐतिहासिक चेतना का महत्त्वपूर्ण आयाम सूफियों की उस संवेदना का निष्कर्ष है जो सांझी तहजीब से सम्बद्ध है। भारतीय कविता की खूबसूरती सूफी संतों-फकीरों के भक्ति काव्य में छुपी हुई है। इस आध्यात्मिक काव्य का शुभारंभ पंजाबी के पहले सूफी दरवेश बाबा फरीद जी करते हैं जिनका पूरा नाम शेख फरीद शकरगंज है। बाबा फरीद जी की पावन बाणी उन आध्यात्मिक मूल्यों की निर्मल बाणी है जिनके कारण मध्यकालीन भक्ति काव्यधारा इस्लाम और हिन्दू संस्कृति के उन सरोकारों को रेखांकित करने में कामयाब बनी जिनकी जरूरत उस समय भारतीय संस्कृति को पुन: स्थापित करने में आवश्यक जान पड़ती थी। यह सब कुछ बाबा फरीद जी की बाणी में विद्यमान था। बाबा फरीद जी ने सीधी-सादी जुबान में भक्ति और दर्शन के उन रहस्यों को खोला जिसे कई शताब्दियों तक कोई भी महापुरुष पारदर्शी नहीं बना सका था।

बाबा फरीद जी ने प्रकृति, संस्कृति, नैतिक जीवन मूल्य एवं सांस्कृतिक जीवन इकाइयों का इस तरह से उदारीकरण किया कि मानव और ईश्वर दोनों का मिलाप सम्भव दिखाई देने लगा। बाबा फरीद जी मानवीय संभावनाओं के महान सूफी फकीर हैं। आंचलिक एवं लोकजीवन की परिक्रमा में बाबा फरीद जी का आध्यात्मिक चिंतन नई राहों को खोलता है। मन और तन के बीच बाबा जी की पावन बाणी ऐसी ताल पैदा करती है कि व्यक्ति प्रसन्नचित्त अवस्था में दुख-सुख को झेलता हुआ उस रूहानी सफर पर निकल पड़ता है जिसकी तलाश में वह शताब्दियां बिता देता है और जब उसका हाथ बाबा फरीद जी जैसे सूफी दरवेश थामते हैं फिर प्रेम, त्याग, सेवा, अहिंसा, संयोग और वियोग, आनंद एवं दुखों के पार की हसीन वादियां उसके पांव तले बिछ जाती हैं। यह परंपरा थी सूफी कवियों की और उत्तरी भारत की संत परंपरा में इसका सांस्कृतिक उत्थान बाबा फरीद जी के हाथों होता है।

बाबा फरीद जी का भारतीय सूफी परंपरा में बहुत बड़ा स्थान है। उनकी पावन बाणी ने उत्तरी भारत के सूफी कवियों को अध्यात्म की वह शिक्षा दी जिसे अपना कर शाह हुसैन, सुलतान बाहू, साईं बुल्लेशाह तथा गुलाम फरीद सरीखे सूफी कवियों ने उत्तरी भारत की काव्य मंजूशा को नए क्षितिजों से जोड़ा। यही कारण है कि शाह हुसैन पंजाबियत की उस संवेदना को अपनी काफियों में उजागर करते हैं जिसकी गूंज हमें आज भी गतिशील चश्मे में सुनाई देती है। सूफी कवि सुलतान बाहू की हूक पंजाबियों के कलेजे को आज भी झकझोर देती है। साईं बुल्लेशाह ने आनंद-विभोर होकर सब में उस सच्चे रब का नूर देखा है। गुलाम फरीद की दर्द भरी काफियां सूफियों का अमर संदेश बनकर दोनों पंजाबों को एक कर देती हैं।

*अध्यक्ष, हिंदी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, श्री अमृतसर।

वास्तव में यही विरासत बाबा फरीद जी की है जिसे आज भी पंजाबी अपने अंग-संग गतिशील होती हुई महसूस करते हैं।

बाबा फरीद जी की पावन बाणी की प्रासंगिकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मुझे लगता है कि सूफियों का संदेश आज के विश्वीकरण के दौर में ज्यादा सार्थक है। अगर बहुत निकट की उदाहरण लें तो आज अमर शांति के मार्ग पर चलने के लिए बाबा फरीद जी की निर्मल बाणी हमारा शाश्वत सम्बल बन सकती है। भारत और पाक के रिश्ते में जो मधुरता बढ़ रही है उसकी पृष्ठभूमि में बाबा फरीद भी खड़े हैं और गुलाम फरीद भी। दोनों मुलकों के बीच अमर और शांति का पहला सेतु बना था व बाबा बुल्लेशाह की मजार के साथ जुड़ा हुआ था, जहां हजारों हिंदोस्तानी व पाकिस्तानी नागरिकों ने जुड़कर कसम खाई थी कि हम सूफियों की उस परंपरा पर चलेंगे जिसमें भाईचारे का अमर संदेश है, क्योंकि बाबा फरीद जी आदमी को आदमी से जोड़ते हैं तोड़ते नहीं और यही सूफियों का सच्चा संदेश है।

उत्तरी भारत की सांस्कृतिक विरासत को भी बाबा फरीद जी का आशीर्वाद प्राप्त है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण श्री गुरु ग्रंथ साहिब है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाबा फरीद जी के ११२ श्लोक और ४ शबद हैं। बाबा फरीद जी पंजाबी के पहले सर्वोत्तम बाणीकार हैं। पंजाबी जुबान की खूबसूरती बाबा जी की बाणी में झलकती है। पंजाबी भाषा की गरिमा का प्रथम पाठ बाबा फरीद जी की बाणी में ही मिलता है। मुल्तानी और लेहंदी भाषाओं का काव्य सौन्दर्य भी आपकी रचनात्मक शक्ति का प्रतीक है। वैसे फारसी भाषा में आपकी उच्च कोटि की रचनाएं उपलब्ध होती हैं।

आपकी विचारधारा राष्ट्रीय संस्कृति की द्योतक है। आपका फलसफा भारतीय दर्शन को नई चेतना देने वाला है। आपकी बाणी में आने वाले हिंदोस्तान की वह तस्वीर मौजूद थी जिसका दर्शन आज हर भारतीय कर रहा है। स्वीकार किया जाता है कि सूफियों की फुलवाड़ी में बाबा फरीद जी वो वटवृक्ष हैं जिसकी सघन छाया का लुत्फ एशिया के देश आज भी उठा रहे हैं। बाबा फरीद जी की बाणी को पढ़ना, सुनना, गायन करना उस प्यास को जन्म देता है जिसकी पिपासा न मिटाए मिटती है, न बुझाए बुझती है, बल्कि जिज्ञासु एक ऐसी यात्रा पर निकल पड़ता है जिसे न धर्म रोकता है, न कर्म, बस, वह लगातार उस मार्ग का राही बन जाता है, जिसकी मंजिल विचारों के तूफान में छुपी होती है और उसकी नाव न डगमगाती है, न डूबती है। यही वैचारिकता बाबा फरीद जी को २१वीं शताब्दी का सर्वलोकप्रिय बना देती है।

मुझे यह भी लगता है कि बाबा फरीद जी की बाणी की प्रासंगिकता में पंजाबी किस्सा-काव्य भी नए अर्थों को प्राप्त हो रहा है। चाहे वारिस शाह हो, दामोदर या पीलू हो, उनकी कहानियों का नया अर्थबोध बाबा फरीद जी की दार्शनिकता में ही खुल रहा है। इस शताब्दी में ऐसे प्रश्नों को भी सूफीवाद के अर्थों में समझने की जरूरत है। बाबा फरीद जी ने पंजाबी सभ्याचार को बहुत कुछ दिया। पंजाबी जीवन-जाच को गरिमामय बनाने में सूफी दरवेशों का बहुत बड़ा हाथ है और इसमें भी वरद् हाथ बाबा फरीद जी का ही है। जिस सांझी तहजीब को लेकर पंजाबी संस्कृति में नए-नए परिवर्तन हो रहे हैं उसकी आधारशिला में बाबा फरीद जी की वही बाणी-संवेदना है जिसकी सुगंध कभी लोकतंत्र के माध्यम से तो कभी धर्म निरपेक्ष समभाव के द्वारा पंजाबी विरासत को मानवतावाद के रास्ते पर अग्रसर कर रही है।

सत्कर्म की प्रेरक : बाबा फरीद जी की बाणी

*-डॉ. निर्मल कौशिक**

यह संसार प्रत्येक प्राणी के लिए कर्म-क्षेत्र है। इस सृष्टि की रचना ही इस उद्देश्य से हुई है कि यहां हर जीवात्मा सत्कार्य कर अपने को उन्नत कर सके। जीवात्मा परमात्मा का ही अंश मानी गई है। अत: जीवात्मा को परमात्मा में पुन: लीन होने के लिए सत्कर्म करने की आवश्यकता है। 'माया' के आवरण के कारण ही जीवात्मा विभिन्न रूपों में इधर-उधर भटकती है, लेकिन जब उसे सत्कर्म करते हुए ज्ञान का आलोक मिल जाता है तो वह माया से मुक्त होकर ब्रह्म में लीन हो जाती है। गुरबाणी में कहा गया है कि सभी जीवों में उसी ब्रह्म का प्रकाश है :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

प्रत्येक प्राणी इस संसार में अपने द्वारा किए गए अच्छे-बुरे कर्मों का फल भोगता है। प्रत्येक जीवात्मा किसी न किसी उद्देश्य से इस सृष्टि पर आती है। इसी प्रकार महान आत्माओं का आगमन तो विशेषत: सोद्देश्य होता है। ईश्वर उन्हें मानव जाति के उद्धार हेतु समय-समय पर कुछ विशेष कार्य सौंप कर भेजता है।

महापुरुषों के इस धरती पर आने का प्रयोजन कुछ विशेष ही होता है। जब मानवता का ह्रास हो रहा हो तथा पृथ्वी पर शांति लुप्त हो रही हो तो इस धरती पर किसी महापुरुष का अवतरण होता है। इतिहास साक्षी है कि मानवता को पथ-भ्रष्ट होने से बचाने हेतु समय-समय पर अनेक महापुरुषों, सिद्धों, साधकों, गुरुओं, पीरों, पैगंबरों और अवतारों ने इस धरती पर जन्म लिया।

बाबा फरीद जी जिस समय पैदा हुए उस समय भी परिस्थितियां मानव-समाज के लिए प्रतिकूल ही थीं। ऊंच-नीच, जात-पात, अमीर-गरीब के बीच रेखाएं खिंच जाने के कारण आम आदमी की स्थिति अत्यंत दयनीय हो रही थी। अन्याय और अत्याचार दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे थे। इसमें पिसने वालों की पुकार सुनने वाला कोई नहीं था। बाबा फरीद जी ने अपने जीवन को मानव-समाज के कल्याण हेतु समर्पित कर दिया। संस्कृत में एक उक्ति है--"परोपकाराय संतां विभूतय:" अर्थात् सज्जनों के ऐश्वर्य परोपकार के लिए होते हैं। बाबा फरीद जी ने अपनी बाणी के माध्यम से लोगों को जीवन की सही राह दिखाई। उन्होंने अपने जीवन के माध्यम से तप, त्याग और संयम का जीवन जीना सिखाया। उनके मधुर, विनम्र और सहज स्वभाव के कारण लोग उनके पास अपने संकटों से मुक्ति पाते थे।

बाबा फरीद जी ने मानव समाज के कल्याण हेतु सही दिशा की ओर अग्रसर होने का संदेश दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने सबसे पहले उस कार्य को स्वयं किया जिस कार्य की अपेक्षा वे दूसरों से रखते थे। बाबा फरीद जी ने अपनी बाणी में अनेक स्थानों पर अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दी है। उनके अनुसार मनुष्य को सत्कार्यों की ओर प्रवृत्त होना चाहिए। बुरे

**विभागाध्यक्ष, सरकारी बृजेन्द्र कॉलेज, फरीदकोट-१५१२०३ (पंजाब), फोन : ०१६३९-२६३०१७*

कर्म करने से इहलोक और परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं। संसार में रहकर मनुष्य को अपने जीवन को संवारने और दूसरों की सेवा करने के अवसर का लाभ लेना चाहिए। मानव-जीवन की यही उपयोगिता है। बाबा फरीद जी ने अपनी निर्मल बाणी में मानव को इसी बात के लिए बार-बार सचेत किया है कि हे मनुष्य! तुझे इस बात पर गौर करना चाहिए कि ईश्वर ने तुझे इस संसार में किसलिए भेजा है? लेकिन मनुष्य अपनी अनभिज्ञता और अज्ञानता के कारण इस महत्वपूर्ण लक्ष्य को भूल जाता है और इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ कार्यों में गंवा देता है। एक दिन जब वह मृत्यु को प्राप्त होता है तो ईश्वर के सामने जाने पर उसे इसका हिसाब चुकाना पड़ता है। बाबा फरीद जी के निर्मल वचन हैं :

फरीदा चारि गवाइआ हंढि कै चारि गवाइआ संमि ॥
लेखा रबु मंगेसीआ तू आंहो केर्हे कंमि ॥

(पन्ना १३७९)

बाबा फरीद जी ने अपनी बाणी में मनुष्य को सत्कार्य करने के लिए प्रेरित करते हुए इस बात के लिए भी सावधान किया है कि हमें दुष्कार्यों से भी बचना चाहिये। यहां तक कि अगर कोई दूसरा व्यक्ति हमारे साथ बुरा व्यवहार करता है तो भी हमें उसके साथ बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिए। बाबा फरीद जी का कथन है कि हमें बुरे का भी भला ही करना चाहिए:

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥

(पन्ना १३८१)

ऐसा व्यवहार रखने से समाज में ईर्ष्या और द्वेष की भावना स्वत: समाप्त हो जाएगी, क्रोध की भावना का भी अंत हो जाएगा। यही भावनाएं मानव को दुष्कार्यों के लिए प्रेरित करती हैं। बाबा फरीद जी ने समाज में समरसता लाने हेतु दुष्कार्यों से दूर रहने तथा सत्कार्यों द्वारा अपने जीवन को सफल बनाने हेतु मानव को ऐसे कार्यों से दूर रहने के लिए कहा है जिनसे उसे ईश्वर के समक्ष जाकर लज्जित न होना पड़े। बाबा फरीद जी का कथन है कि जो कार्य गुणहीन हैं अर्थात् जिन कार्यों से मानव-प्रतिष्ठा की हानि होती है उन कार्यों का त्याग करना ही हितकर है। वे कहते हैं:

फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ॥
मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि ॥

(पन्ना १३८१)

आम तौर पर यह धारणा प्रचलित है कि अच्छे कर्म करने से पुण्य और बुरे कर्म करने से पाप लगता है अर्थात् 'अंत भले का भला' तथा 'अंत बुरे का बुरा' होता है। कोई कांटे बोकर भला फूल कैसे प्राप्त करेगा? आम की इच्छा रखने वाला अगर निबौरी बोकर भी आम की इच्छा रखेगा तो उसे निराश ही होना पड़ेगा। अगर कोई किसान बबूल का बीज बोकर दाख के फल की इच्छा करे तो उसकी इच्छा ठीक वैसी ही है जैसे कोई व्यक्ति उम्र भर ऊन कातने के बाद भी रेशमी वस्त्र पहनने की इच्छा करे। बाबा फरीद जी के अनुसार:

फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआ किकरि बीजै जटु ॥
हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु ॥ (पन्ना १३७९)

बाबा फरीद जी ने मानव को सत्कार्य करने के लिए प्रेरित तो किया ही है साथ ही अनेक स्थानों पर उन्होंने दुष्कार्यों के फल और परिणाम के प्रति भी सचेत किया है। उन्होंने अच्छे कार्यों को क्रियात्मक रूप देने को अपने शब्दों में 'अमल' कहा है। बुरे कार्यों को उन्होंने 'मंदे अमल' कहा है। उन्होंने अपनी बाणी के माध्यम से भरसक प्रयास किया है कि इंसान बुरे कार्यों में प्रवृत्त न हो। वह दुष्कार्यों से अपना ध्यान हटा कर सत्कार्यों में लीन हो जाए ताकि

वह अपना जीवन सफल कर सके। उनका कथन है कि मनुष्य को दूसरे के दुष्कार्यों के फल का परिणाम देखकर ही स्वयं को इससे बचने का प्रयास करना चाहिए :

फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ॥
कमादै अरु कागदै कुंने कोइलिआह ॥
मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह ॥
(पन्ना १३८०)

बाबा फरीद जी ने दुष्कार्यों में प्रवृत्त रहने वाले उन मनुष्यों को भी चेतावनी दी है जो इनके परिणामों से बेपरवाह हैं और उन्हें इनका फल हर हालत में भुगतना पड़ता है, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। कुछ समझदार लोग तो दूसरों को बुरे कार्यों का बुरा परिणाम भोगते देखकर सुधर जाते हैं लेकिन कुछ फिर भी बुरे कार्यों में लीन रहते हैं। उनके विषय में बाबा फरीद जी ने कहा है कि हे मनुष्य! दूसरों के अनुभव से सीख कर ही अपना सुधार कर ले अन्यथा इस संसार में किये गये अच्छे और बुरे कार्यों का दरगाह अर्थात् ईश्वर के दरबार में एक दिन हिसाब तो देना ही पड़ेगा। बाबा फरीद जी का कथन है कि इस संसार में किये हुए अमल अर्थात् अच्छे और बुरे कार्य ही दरगाह अर्थात् ईश्वर के दरबार में सहायक सिद्ध होते हैं :

फरीदा मउतै दा बंना एवै दिसै जिउ दरीआवै ढाहा ॥
अगै दोजकु तपिआ सुणीऐ हूल पवै काहाहा ॥
इकना नो सभ सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा ॥
अमल जि कीतिआ दुनी विचि से दरगह ओगाहा ॥
(पन्ना १३८३)

बाबा फरीद जी ने मानव को अपने सत्कार्यों द्वारा अपने जीवन को संवारने की प्रेरणा देने हेतु ही अपने जीवन को मानवीय गुणों से अलंकृत कर स्वयं अपने अनुभवजन्य व्यवहार से समाज का मार्गदर्शन किया। उन्होंने मनुष्य को दया, प्रेम, सौहार्द, सहयोग, सदाचार, नम्रता और मधुरता जैसे गुणों को अपना कर दूसरों का अहित करने वाली दुष्वृत्तियों को दूर करने के लिए प्रेरित किया। इन्हीं सद्गुणों और सत्कार्यों के कारण मनुष्य इहलोक और परलोक में सम्मान का अधिकारी बनता है। इन्हीं सत्कार्यों के फलस्वरूप मानव स्वयं को तो सुखी करता ही है समाज में भी प्रतिष्ठा प्राप्त करता है; पूरा विश्व उसका अपना हो सकता। ईश्वर ऐसे सत्कार्यों को करने वाले मनुष्य को अपनी कृपा का पात्र बनाता है। बाबा फरीद जी ने इसी लिए कहा है :

आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ॥
फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥ *(पन्ना १३८२)*

बाबा फरीद जी जिस युग में पैदा हुए थे उस युग में अन्याय और अत्याचार सर्वत्र व्याप्त था। लोग मार-काट, छीना-झपटी कर धन संग्रह करने में लगे हुए थे। बाबा फरीद जी ने मानव-जीवन के शाश्वत मूल्यों की ओर ध्यान दिलाकर मनुष्य को सावधान करते हुए बताया कि संसार में किये गए सत्कार्य अर्थात् पुण्य और शुभ कार्य ही मनुष्य के काम आते हैं। इस भौतिक संसार की सभी वस्तुएं यहीं धरी रह जाएंगी, केवल अच्छे कर्म ही उसके साथ जाएंगे और वही काम आएंगे। मनुष्य को इहलोक और परलोक में अपने अच्छे-बुरे कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। जो उत्पन्न हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित ही है। अत: मनुष्य को मृत्यु को सदैव स्मरण रखना चाहिए। सत्कार्यों में प्रवृत्त होकर नाम-स्मरण तथा लोक-उपकार करते हुए अपना जीवन सार्थक करना चाहिए। बाबा फरीद जी ने मनुष्य को सावधान करते

हुए ईश्वर की दरगाह (दरबार) में अमल अर्थात् अच्छे कर्मों के काम आने की बात कह कर निश्चय ही मनुष्य को सत्कार्यों में प्रवृत्त होने की प्रेरणा दी है :

साढे त्रै मण देहुरी चलै पाणी अंनि ॥
आइओ बंदा दुनी विचि वति आसूणी बंन्हि ॥
मलकल मउत जां आवसी सभ दरवाजे भंनि ॥
तिन्हा पिआरिआ भाईआं अगै दिता बंन्हि ॥
वेखहु बंदा चलिआ चहु जणिआ दै कंन्हि ॥
फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कंमि ॥ *(पन्ना १३८३)*

वास्तव में हमारी अच्छाई ही हमारे काम आती है। किसी भी सत्य या यथार्थ को जीवन में धारण करना ही सत्कार्य है। कथनी और करनी में अंतर होना सत्कार्य नहीं है। बाबा फरीद जी के अनुसार सत्कार्य अर्थात् अमल ही पुण्य कर्मों के रूप में दरगाह में काम आते हैं। ईश्वर भी ऐसे सत्कार्यों से युक्त अमल करने वाले मनुष्यों को ही अपनी शरण में लेता है।

मनुष्य अपने आचरण या व्यवहार से ही जाना जाता है। अच्छे आचरण वाला मनुष्य ही समाज में प्रतिष्ठित होता है। बाबा फरीद जी की सम्पूर्ण बाणी मानव को बुरे कर्मों से बचने की प्रेरणा देकर सत्कार्यों की ओर प्रेरित करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। आज मानव अज्ञानान्धकार में भटक रहा है। तनाव और भौतिक सुखों की दौड़ के कारण वह अपने वास्तविक लक्ष्य से भटक गया है। ऐसे में बाबा फरीद जी की बाणी उसे सत्कार्यों में प्रवृत्त कर अपने लक्ष्य की ओर उन्मुख कर सकती है।

कविता

जलियांवाला बाग

जलियांवाला बाग देश की,
गरिमा का यश-धाम है।
भारत के बच्चे-बच्चे का,
सादर उसे प्रणाम है।
जिसकी यादगार जन-जन को
नई प्रेरणा देती है,
उस मिट्टी का चप्पा-चप्पा
रोमांचक-अभिराम है।
उद्वेलित होकर घटना से
जलियांवाला बाग की
स्वतंत्रता के लिए हमारा
खूब चला संग्राम है।
होना था कुर्बान जिन्हें
वे हुए आन पर न्योछावर
देश हुआ स्वाधीन हमारा,
उसका ही परिणाम है।
देश-प्रेम का वेग चला है
जितना भी उस ठौर से
सपने में भी मिला न करता
उसे कभी विश्राम है।
लोक-चेतना का संबल जो
स्वाभिमान का पुंज है,
स्वार्थ न जिसे कभी छू पाया
वह सदैव निष्काम है।
शौर्य कहें या कहें पराक्रम
अथवा राष्ट्रीयता महान,
इन सबके उज्जवल चरित्र का
वही अनूठा नाम है।

-डॉ. जगदीश चंद्र शर्मा, संपादक, 'बुलंद बानस', पो. गिलूंड (राजस्थान)-३३३२०७

सरब रोग का अउखद नाम

-कैप्टन डॉ मनमीत कौर*

मनुष्य परमात्मा की श्रेष्ठ रचना है, लेकिन आज का व्यक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार में फंसा हुआ है। चिन्ता-रोग तथा दुख आदि काल से ही मनुष्य के जीवन के साथ जुड़े रहे हैं, लेकिन मनुष्य को लगे पांच रोगों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) का गुरबाणी में बहुत स्थानों पर वर्णन आता है तथा इससे बचाव के उपाय भी बड़े विस्तार से बताए गए हैं। गुरबाणी का कथन है :

इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥
अंम्रितु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥ (पन्ना ६००)

लोभ क्या है? दूसरों के पदार्थों को अनुचित प्रकार से प्राप्त करने की इच्छा लोभ है :

लोभी का वेसाहु न कीजै जे का पारि वसाइ ॥
अंति कालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइ ॥
(पन्ना १४१७)

गुरु साहिब का कथन है :

त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥
महा संतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु ॥ (पन्ना ६८२)

लोभी व्यक्ति फूलों की सेज पर भी तड़पते हैं लेकिन संतोषी जीव कांटों की सेज पर भी मुस्कराते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है :

बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥ (पन्ना २७९)

लोभ या तृष्णा को संतोष ही काबू में कर सकता है। श्री गुरु नानक देव जी ने इस हकीकत के विषय में बयान किया है :

भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥
(पन्ना १)

अर्थात् कोई मनुष्य कितना कुछ भी इकट्ठा कर ले उसकी भूख या तृष्णा नहीं मिटती, क्योंकि ऐसे व्यक्ति की दशा इस प्रकार की हो जाती है :

सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥ (पन्ना २७८)

चिंता, रोग, दुख आदि काल से ही मनुष्य के जीवन के साथ जुड़े रहे हैं लेकिन आज के मशीनी युग में ये समस्याएं बहुत गंभीर रूप धारण करती जा रही हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने आज से लगभग ५०० साल पहले ही इन समस्याओं के बारे में जान लिया था। उनका कथन है:

नानक दुखीआ सभु संसार ॥ (पन्ना ९५४)

इस चिंता का कारण अवगुणों भरी अवस्था है। परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य को सोचने-समझने की सामर्थ्य दी है और यही विशेषता उसे अन्य जीवों से अलग करती है। लेकिन यह बहुत बड़ी त्रासदी है कि आज का मनुष्य यह भूल गया कि :

मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥ (पन्ना २१९)

अज्ञानतावश यह सांसारिक वस्तुओं के मोह में फंस कर इस बात को याद नहीं रखता कि वो परमात्मा का ही एक हिस्सा है तथा उसे परमात्मा में ही लीन हो जाना है। गुरबाणी का

*विभागाध्यक्षा, दर्शनशास्त्र विभाग, नवयुग कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजेन्द्र नगर, लखनऊ।

कथन है :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥

(पन्ना ४४१)

'हउमै' सबसे बड़ा रोग माना गया है। यह रोग अचेतन रूप से सभी प्राणियों में **'मैं'**, **'मेरी'** के रूप में विद्यमान रहता है। यदि गंभीरता से सोचें तो ये दोनों शब्द हमारे नित्य के जीवन की बुनियाद बन चुके हैं। नि:संदेह इसके बिना संसार की कार्यवाही भी संभव नहीं है? गुरबाणी का कथन है :

हउमै दीरघ रोग है दारू भी इस माहि ॥

(पन्ना ४६६)

इस कथन में उत्तर भी शामिल है। यदि सवाल सामने है और उसका उत्तर भी साथ में ही दिया हुआ है तो फिर किस बात की कठिनाई? हउमै को मारने के लिए गुरबाणी में अनेकों हल दिए गए हैं। भक्ति-मार्ग की परिभाषा के अनुसार नाम-सिमरन तथा साधना के द्वारा लोभ, लालच व क्रोध आदि दुर्गुणों की मैल को दूर किया जा सकता है :

भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ (पन्ना ४)

हमें अपने अंदर सेवा, सिमरन, विनम्रता व मिठास जैसे गुणों का प्रवेश करना है। इसकी संभावना तभी हो सकती है जब हमारी सोच-दृष्टि का घेरा उस परम ज्योति की व्यापकता को अपने हृदय के अंदर स्वीकार करे:

--मन तूं जोति सरूपु है . . . ॥ (पन्ना ४४१)
--घटि घटि मै हर जू वसै ॥ (पन्ना १४२७)

ऐसा मनुष्य हउमै तथा हुक्म दोनों विधियों को प्रभु द्वारा उत्पन्न की हुई मान लेता है तथा यह समझ लेता है कि यद्यपि मनुष्य-जन्म में आया है लेकिन हुक्म न मानने के कारण वह पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, नेकी-बदी तथा यश-अपयश में फंस जाता है, जिस कारण से वह जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है।

आधुनिक समाज में इस रोग का मुख्य कारण मनुष्य की सीमा से अधिक सुख-सुविधाएं हैं। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से आगे निकलना चाहता है। व्यक्ति उन सांसारिक पदार्थों के लिए दुखी तथा चिंतित रहता है जिनकी कोई स्थिर सत्ता नहीं है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कथन है :

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥

(पन्ना १४२९)

व्यक्ति इन समस्याओं का हल नशीले पदार्थों तथा शराब में ढूंढ रहा है। ये वस्तुएं व्यक्ति को और भी ज्यादा कमजोर बना रही हैं। परिणामस्वरूप मनोवैज्ञानिकों, दिमागी बीमारियों के विशेषज्ञों तथा नशा-नियंत्रण केन्द्रों में मरीजों की गिनती बढ़ती ही जा रही है जिससे बहुत-सी सामाजिक बुराइयां, जैसे हिंसा, हत्या, आत्म-हत्या उत्पन्न हो रही हैं।

हउमै का शिकार मनुष्य, परमात्मा तथा दूसरों के प्रति अपने कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। वह केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति करना चाहता है। लेकिन विचारने की बात यह है कि इस प्रकार की जिंदगी हमें कहां तक और कितनी खुशी प्रदान कर सकती है?

विज्ञान की प्रगति ने मनुष्य को बहुत-सी सुख-सुविधाएं प्रदान की हैं, लेकिन इस सबका नतीजा क्या है? वर्तमान समय में अधिकांश लोग रात में नींद की गोली खाये बिना सो नहीं सकते। व्यक्ति अहंकार में आकर यह सोचता है कि इन सांसारिक पदार्थों की रचना उसने की है। उसका यह अहंकार उसे चिंता तथा विभिन्न रोगों का शिकार बना रहा है। भोग-लिप्सा के इस व्यस्त युग में मनुष्य अपने आप को असहाय महसूस कर रहा है। इस यांत्रिक युग में वह स्वयं भी एक यंत्र बन गया है। क्या यंत्र का

भी कोई लक्ष्य होता है? चलते-चलते घिस जाना ही उसका भाग्य है।

चिंता-मुक्त रहने के लिए आवश्यक है सादा जीवन, जो कि अपनी सामर्थ्य के मुताबिक व्यतीत किया जाये। मनुष्य में विनय, चरित्र-बल आदि गुणों का विकास होना अति आवश्यक है। इनके बिना उसका जीवन सादा नहीं हो सकता। इन गुणों का प्रभाव उसके जीवन और विकास पर पड़ता है। जीवन में सादगी लाना और तुच्छ विचारों को हृदय से दूर कर देना एक महान गुण है। चिंता-रोग से मुक्ति प्राप्त करने के लिए किरत करना अर्थात् स्वावलंबन का सिद्धांत, नाम जपना अर्थात् एकाग्रचित्त होकर प्रभु का सिमरन करना और वंड के छकना अर्थात् यह नैतिक आदेश कि अपनी कमाई का दसवां हिस्सा आवश्यक रूप से दीन-दुखियों तथा जनसामान्य के हित में लगाना, ये त्रिरत्न सहायक हो सकते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बाणी मनुष्य को हर मुश्किल से उभार कर उसको नेक राह पर चलने की प्रेरणा देती है। गुरबाणी में प्रभु के नाम-सिमरन को ही चिंता दूर करने में सहायक माना गया है :

मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥
मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥
(पन्ना ७२७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में फरमान है :

दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥
(पन्ना ९२२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आधुनिक युग की प्रत्येक समस्या का हल है। आवश्यकता है तो उसका अध्ययन करने की तथा उसके सिद्धांतों के अनुसार अपने जीवन को ढालने की।

एक किसान बीज बोने निकला . . . कुछ बीज रास्ते में गिरे, लोगों के पैरों में आये या चिड़ियों द्वारा चुग लिए गए; कुछ पथरीली जमीन पर गिरे, अंकुरित हुए . . . पर सूख गए; कुछ कंटीली झाड़ियों में गिरे और उन्हें तेजी से बढ़ती हुई झाड़ियों ने नष्ट कर दिया। कुछ बीज उपजाऊ भूमि पर गिरे, जो बढ़े और सौ गुना फसल दी। कहने का तात्पर्य है, रास्ते में बीज गिरने का अर्थ है कि परमेश्वर के संदेश को सुनकर भी ग्रहण न करना। पथरीली भूमि पर गिरे बीज अपरिपक्व मानस का परिचायक हैं, जो उपदेश को हृदय में टिकाकर नहीं रख पाता, अविश्वास करके उसे खो बैठता है। कंटीले पौधों में गिरे बीज उन व्यक्तियों की भांति हैं जो सांसारिक चिंताओं और धन की आसक्ति के कारण जीवन में आनंद की फसल नहीं उगा पाते। उपजाऊ मिट्टी में गिरे बीज उन व्यक्तियों के समान हैं जो परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप आचरण करते हैं और परिणामस्वरूप आनंद पाते हैं। इसलिए महत्वपूर्ण है उपदेश को ग्रहण करना और उसे जीवन में उतारना।

संतुलित जीवन ही आदर्श जीवन है अर्थात् अहं को भली प्रकार नियंत्रित करके संतुलित जीवन व्यतीत करना :

जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥
कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥ *(पन्ना १४२७)*

अज्ञान ही मनुष्य के दुखों या चिंताओं का कारण माना गया है। अज्ञान से मोह और मोह से राग उत्पन्न होता है। किसी वस्तु से अनुराग होने पर ही उसकी कामना होती है और कामना ही दुखों या चिंताओं की जड़ है। राग-द्वेष से निवृत्ति तभी होगी जब इंद्रियों और मन पर अपना अधिकार हो। मन ही इंद्रियों का संचालक होता है, इसी से संकल्प होता है। अत:

मन पर विजय प्राप्त करने से ही इंद्रियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। प्रशंसा या निंदा सुनकर, सुख या दुख देने वाली वस्तु को छूकर, सुंदर या कुरूप वस्तु को देखकर, स्वादयुक्त या अस्वादयुक्त खाकर, सुगंधित या असुगंधित से जिसे हर्ष-विषाद न हो, वही जितेन्द्रिय है। मनुष्य को कर्त्तव्य की भावना से ही कर्म करना चाहिए। इस प्रकार के कर्म से ही आत्म-शुद्धि होती है।

आज आवश्यकता है दिखावों से थोड़ा हट कर अपने मन के अंदर झांक कर समझने व विचार करने की। आइए, कोशिश करें कि उठते-बैठते *"जो किछु है सो तेरा"* के जरिए अपने अचेतन मन में से 'मैं', 'मेरी' से ऊपर उठ कर 'तू', 'तेरी' का जाप करके उस निरंकार की कृपा का पात्र बनें। बस, यही एक दारू है जो इस दीर्घ रोग से मुक्त करवा सकता है।

कविता

अजब है तेरी शान!

गोबिंद कैसी रचना तूने आपे आप रचाई!
सारे जहां में खालसा की अलग छवि दर्शाई।
"धरम चलावन संत उबारन ॥ दुसट सभन को मूल उपारन ॥" हेतु जग में आयो।
दीन हीन दशा देख भारत की,
मन कुछ करने को अकुलायो।
शीश झुका बोले, "देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन से कबहूं न टरों ॥
न डरो अरि सों जब जाइ लरो"
यही सोच, शान हिंद की आन-बान बचावन,
आलौकिक खेल रचायो।
पांच प्यारों की रचना, खालसा पंथ की सृजना करवावन।
पांच शीश मांगे धर्म पर वारन, परीक्षा में सफल उतारन।
दयाराम, धरम, मोहकम, हिम्मत, साहिब
चहुं दिशाओं, चहुं वरणों के।
न झिझके न डरे, मन हर्षायो।
गोबिंद उनको चुनके,
अमृत तैयार कर खंडे-बाटे का, पांचों पे अमृत सरसायो।
छका अमृत, बने सिंघ, पांच ककारों से सजवायो।
फिर बोले, कैसा सिंघ होगा?
सारे जग में होगी तेरी अलग पहचान।
रण में तू एक नहीं, समझ सवा लाख समान।
मेहनत करना, वंड छकना, जपना गुरु का नाम।
अजब है तेरी आन, अजब है तेरी शान!
पांच ककारों की मर्यादा का, है तू पालनहार।
तू गुरु का सिंघ, खालसा, तू सरदार।
कियो एक संकल्प, कौम को सिंघ बनाऊं।
चिड़ियों से मैं बाज तुडाऊं।
सवा लाख से एक लडाऊं।
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।
फिर लई अकाल की आज्ञा, अजब सजाया पंथ।
सब सिक्खों को हुक्म दिया, "गुरू मानीओ ग्रंथ।"
वो जानते थे, कलयुग में भक्ति के साथ-साथ,
निर्बलों की रक्षा, धर्म पर खड़े रहना,
बगैर शस्त्र के सफल नहीं होगा,
सो तलवार लहरा कर बोले :
इस ख्वाब को जज्बा-ए-बेदार दिये देता हूं
खालसा पंथ के हाथ में तलवार दिये देता हूं,
क्योंकि जहां शस्त्र नहीं
वहां शास्त्र अमल से दूर होते हैं।

-श्री रणवीर सिंह मांदी, मु. पो.-मांदी, तहसील-नारनौल, जिला-महेंद्रगढ़ (हरियाणा)

गुरुद्वारा लखनौर साहिब

*-डॉ. प्रदीप शर्मा स्नेही**

अंबाला शहर से लगभग ९ किलोमीटर की दूरी पर अंबाला-लदाणा उपमार्ग पर स्थित प्राचीन गांव लखनौर को (अब लखनौर साहिब के नाम से जाना जाता है) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की ननिहाल होने का गौरव प्राप्त है। भाई लाल चंद सुभीखिया की पुत्री माता गुजरी जी का विवाह नौंवे गुरु श्री गुरु तेग बहादर जी से सम्पन्न हुआ था। पटना नगर में माता गुजरी जी की कोख से २३ पौष, संवत १७२३ को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जन्म लिया था। चार वर्ष बंगाल व आसाम-भ्रमण के बाद जब श्री गुरु तेग बहादर जी पटना लौटे तो होनहार व विलक्षण पुत्र बाल गोबिंद राय को देखकर गद्‌गद् हो गये। कुछ समय बाद वे वहां रहने के बाद औरंगजेब के अत्याचारों से त्रस्त पंजाब की जनता को ढाढस बंधाने अनंदपुर (अब श्री अनंदपुर साहिब) प्रस्थान कर गये।

कुछ वर्षों के पश्चात श्री गुरु तेग बहादर जी ने परिवार को अनंदपुर साहिब बुलवा भेजा। पटना के लोगों की आंख का तारा बन चुके विलक्षण बालक बाल गोबिंद राय जी को पटना के राजा फतहचंद, उनकी रानी व अन्य लोगों ने अश्रुपूर्ण विदाई दी। काशी (वाराणसी), अयोध्या, इलाहाबाद, लखनऊ, कानपुर, वृंदावन, मथुरा होता हुआ परिवार अन्य अनुयायिओं के साथ अंबाला के पास स्थित लखनौर गांव पहुंचा। श्री गुरु तेग बहादर जी के निर्देशानुसार लखनौर में ही पड़ाव डाल दिया गया। श्री गोबिंद राय जी यहां लगभग ६ माह रहे। दूर-दूर से लोग उनके दर्शनार्थ आने लगे। प्रतिदिन दीवान सजता, शबद-कीर्तन होता व बाल सैनिकों की परेड होती। गुरु जी स्वयं सेनापति बनते व बाल सैनिकों को अपने पीछे लगाये जब लखनौर की गलियों से गुजरते तो नर-नारी और बाल वृद्ध सभी इस विलक्षण दृश्य को देखकर अभिभूत हो जाते और मंत्रमुग्ध हो उन्हें निहारते रहते। भाई वीर सिंघ ने लिखा है :

बाल उमर विच दसवें गुरु जी अनंदपुर जांदे,
विच लखनौर रहे कुझ चिर तक,
अरशी जोत जगांदे।

करनाल के पीर आरिफ दीन और मुस्लिम फकीर सैय्यद भीखन शाह ने लखनौर पहुंच कर गुरु जी के दर्शन किये और उनमें अल्लाह (प्रभु) का प्रकाश देखा। वे दोनों संत उनके सामने नत्मस्तक हो गये। अपने अनुयायिओं के विरोध करने पर उन्होंने उन्हें गुरु जी की विलक्षणता के विषय में बताया।

६-७ माह प्रकृति की ममतामयी गोद में अपने ननिहाल लखनौर साहिब में बिताकर पिता जी की आज्ञा से वे अनंदपुर साहिब रवाना हो गये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के इस गांव में कुछ समय बिताने के कारण यह गांव श्रद्धास्थली बन गया और उसे गुरु-स्थान का दर्जा प्राप्त हो गया। १७६२ ई में अफगान सरदार अहमदशाह के अफगानिस्तान लौटने के पश्चात सिक्खों ने कोटकछुआ के नवाब व सरहिंद के सूबेदार जैन

**विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग, एस. ए जैन कॉलेज, अंबाला शहर (हरियाणा)।*

खां को आक्रमण कर मार डाला व कोटकछुआ के किले को तोड़ कर उसकी ईंटों को लखनौर ले आये। इन्हीं ईंटों से लखनौर में गुरुद्वारा साहिब का निर्माण किया गया। उस समय गुरुद्वारा साहिब की सेवा बाबा हरबख्श सिंघ करते थे। यहां महाराजा रणजीत सिंघ के आने का भी उल्लेख मिलता है।

एक शताब्दी तक यह गुरुद्वारा साहिब पटियाला रियासत के प्रबंधन में रहा। इस समय यह गुरुद्वारा साहिब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के अधीन है। गुरुद्वारा लखनौर साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, माता नानकी जी और माता गुजरी जी से सम्बंधित कुछ पवित्र वस्तुयें संग्रहीत हैं। इन वस्तुओं में माता गुजरी जी का पलंग, माता नानकी के पलंग के दो पावे, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पलंग, गुरु जी के दो तीर, एक जमदाड़ और एक कटारनुमा बरछी सम्मिलित है। पवित्र गुरुद्वारा साहिब के निकट स्थित माता गुजरी जी का मीठे पानी का कुआं व कच्चा तालाब अमूल्य ऐतिहासिक व धार्मिक धरोहर है। प्रति वर्ष दशहरे के दिन यहां भरने वाले 'जोड़ मेले' में श्रद्धालुओं का ज्वार उमड़ पड़ता है। इसी दिन ये पवित्र वस्तुयें भी प्रदर्शित की जाती हैं। लखनौर साहिब में आने वाले श्रद्धालु यात्री युग-पुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के आलौकिक व्यक्तित्व को अन्तर्रात्मा में बसा कर धन-धान्य होते हैं।

कविता

अरदास

साधना, आराधना, मन की शुद्ध भावना है अरदास।
याचना, उपासना, मन की कुल कामना है अरदास।
सच्चे मन से, निर्मल मन से कीजिए प्रभु आगे अरदास।
अनुनय, विनय है, दुखी मन को सांत्वना है अरदास।
जो मांगोगे, वही फल मिलेगा उस एक ओंकार से,
वंदना, निवेदन है, उस ओंकार से सामना है अरदास।
उसकी दया है, उसकी कृपा की मुख्य कुंजी है अरदास।
हमारे कर्मों की, हमारे यत्नों की कुल संचय पूंजी है अरदास।
ऐ प्राणी! क्यों होता है यूं निराश, उदास और मायूस?
हर ले निराशा, दूर कर उदासी, हरती हर भ्रांति है अरदास।
भक्ति और शक्ति को शिखर तक अरदास ले जाती है,
देती सुख ही सुख, धीरज ही धीरज, देती शांति है अरदास।
"तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥
कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥"
तेरी कृपा, तेरी दया के बिना, हे मालिक, कुछ होता नहीं,
तेरी कृपा, तेरी दया के बिना, मिटे न अंदर का अंधेरा।
तेरी कृपा, तेरी दया के बिना, मिले न ज्ञान का प्रकाश,
तेरी कृपा, तेरी दया से, हो जाये बाहर-भीतर सवेरा।
हर ले मन की हर चिंता, हर ले मन का हर संताप अरदास।
होता इसका असर खास, दूर करे तन-मन का ताप अरदास।
यह दे श्वास-श्वास धरवास, कदम-कदम पर बंधाये आस,
पहुंचाये मुक्ति के द्वार, ले जाये भवसागर पार, जाप अरदास।
प्रभु की स्तुति है, समूचे अस्तित्व की प्रस्तुति, संपूर्ण समर्पण,
जैसे बाबा मक्खण शाह की, बनी इलाही आलाप अरदास।

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर', बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जालंधर। मो. ९८७२२-५४९९०

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सृजनात्मक उद्देश्य

*-डॉ. अविनाश शर्मा**

श्री गुरु नानक देव जी ने जब इस धरती पर अवतार धारण किया तब यहां के लोग वास्तविक धर्म को भूल कर, छोटे-छोटे सम्प्रदायों में बंट कर, धार्मिक आडंबरों को ही धर्म मान रहे थे। लोग परम सत्ता को भूल कर अनेक देवी-देवताओं के भ्रम-जाल में उलझ रहे थे। श्री गुरु नानक देव जी ने देश तथा विदेश में यात्राएं कीं। इन यात्राओं में उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग से संवाद साधा और लोगों को मठाधीशों द्वारा फैलाए गए भ्रमों को तोड़कर एक ईश्वर के प्रति निष्ठावान होने का उपदेश दिया। इन यात्राओं के दौरान श्री गुरु नानक देव जी अनेक धर्मों के आचार्यों से भी मिले। उन्हें भी शुद्ध धर्म के सम्बंध में बता कर जागृत किया और मानवता की सेवा के लिए प्रेरित किया। श्री गुरु नानक देव जी अपने पास एक 'पोथी' रखा करते थे जिस पर वे अपने रचे शबदों को लिखा करते थे। यही बाणी बाद में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित हुई। श्री गुरु नानक देव जी ने भक्त कबीर जी तथा बाबा फरीद जी के श्लोकों को भी इकट्ठा किया था। १५३९ को जब भाई लहिणा जी दूसरे गुरु के रूप में श्री गुरु अंगद देव जी के नाम से गुरगद्दी पर विराजमान हुए तो श्री गुरु नानक देव जी ने स्वरचित एवं संकलित बाणी को श्री गुरु अंगद देव जी को सौंप दिया था। वास्तव में यह पावन ग्रंथ के संकलन का संकेत था जो बाद में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

श्री गुरु अंगद देव जी के काल में तीन भाषाएं बोली जाती थीं। मुगल दरबार तथा इससे सम्बंधित अधिकारी एवं कर्मचारी फारसी का प्रयोग करते थे और नगर में रहने वाले हिंदी का उपयोग करते थे। पंजाब के बहुसंख्यक लोग एक ऐसी बोली को बोलते थे जिसकी कोई लिपि नहीं थी। श्री गुरु अंगद देव जी ने बहुत यत्नों के पश्चात इस बोली को 'गुरमुखी लिपि' का नाम दिया और इस लिपि में लिखे गए शब्दों को पंजाबी कहा जाने लगा। श्री गुरु अंगद देव जी ने इसी भाषा में श्लोक लिखे और इसी भाषा को अपने गुरु की शिक्षाओं के प्रचार एवं प्रसार के लिए उपयोग किया। इस प्रकार आदि ग्रंथ साहिब के संकलन का कार्य प्रारंभ हुआ।

१५५२ ई में श्री गुरु अंगद देव जी के पश्चात श्री गुरु अमरदास जी गुरगद्दी पर सुशोभित हुए। दोनों पूर्व गुरु साहिबान की बाणी इन्हें सौंपी गई। अपने गुरु-काल में भी श्री गुरु अमरदास जी ने बाणी की रचना की। १५७४ ई में जब श्री गुरु अमरदास जी ने भाई जेठा जी को गुरगद्दी सौंपी, उस समय उनके बड़े बेटे बाबा मोहन जी ने उन्हें गुरु मानने से इंकार कर दिया और पहले हुए गुरु साहिबान की बाणी को अपने साथ ले गए। चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी ने १५७४ ई में अमृतसर शहर की नींव रखी। श्री गुरु रामदास जी ने भी पावन बाणी की रचना की। ये शबद श्री गुरु अरजन देव जी को सौंप दिए गए जब वे गुरगद्दी पर विराजमान हुए।

सिक्ख परंपरा के अनुसार पहले तीन गुरु

***१२०५, अर्बन अस्टेट, फेज-१, जालंधर।*

साहिबान की बाणी बाबा मोहन जी के पास थी। श्री गुरु अरजन देव जी ने बाबा बुड्ढा जी तथा भाई गुरदास जी को उनके पास बाणी लाने के लिए भेजा किन्तु बाबा मोहन जी ने देने से इंकार कर दिया। फिर श्री गुरु अरजन देव जी स्वयं इनके पास बाणी लेने के लिए गए। बाबा मोहन जी ने उन्हें बहुत आदर के साथ बाणी सौंप दी। बाणी की पांडुलिपियों को प्राप्त कर श्री गुरु अरजन देव जी ने भाई गुरदास जी की सहायता से 'आदि ग्रंथ साहिब' की रचना-प्रक्रिया आरंभ की। इन्होंने भाई संतराम, भाई हरिआ, भाई सुक्खा तथा भाई मनसा राम, चार सुलेख लेखकों को भी अपने साथ कर्मचारियों के रूप में रखा।

श्री गुरु अरजन देव जी ने पहले गुरु साहिबान की बाणी को इक्टठा करके उसे क्रमबद्ध किया, बाणियों के शीर्षक निश्चित किए, बाणी को संगीतात्मक एकरसता प्रदान कर सच्ची और कच्ची बाणी का विश्लेषण कर, एक संपादक की रचनात्मकता को सिद्ध किया। कई वर्षों के अनथक परिश्रम के पश्चात १६०४ ई में यह पावन धर्म-ग्रंथ सम्पूर्ण हुआ और इसे 'पोथी साहिब' का नाम दिया गया। सारी संगत को इसके दर्शन-दीदार करवाए गए। पोथी साहिब को बाबा बुड्ढा जी की देख-रेख में श्री हरिमंदर साहिब में सुशोभित किया गया। इस पावन ग्रंथ में श्री गुरु अरजन देव जी के २३१३ शबद हैं। इस पावन ग्रंथ में वैदिक काल से लेकर मुस्लिम विचारधारा के प्रसार तक के सभी धर्मों के विचारों पर चिंतन किया गया मिलता है।

इस पावन ग्रंथ में ६ गुरु साहिबान, १५ भक्त साहिबान, ११ भट्टों तथा गुरु-घर के निकटवर्ती गुरसिक्खों की बाणी दर्ज है। यह पावन ग्रंथ एक ऐसा विलक्षण ग्रंथ है जिसमें मानव-चेतना से सम्बंधित धर्म, दर्शन, चिंतन, अनुभव, भावना तथा मानव संस्कृति के अनेक पक्ष प्रतिबिंबित हुए हैं। ब्रह्म, जीव, आत्मा, नैतिकता, मानसिकता, जन्म-मरण, सृष्टि आदि सूक्ष्म विषयों से लेकर इतिहास, जीवन, समाज, आचरण-नीति, राजनीति, सहज-साधना तथा एकता आदि अनेक यथार्थ विषयों व समस्याओं सम्बंधी विचार मिलते हैं। इस प्रकार इस पावन ग्रंथ का विषय-वस्तु सम्पूर्ण मानवता के लिए बहुत ही उपयोगी है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी भारत के किसी विशेष प्रांत, क्षेत्र अथवा भूखंड से सम्बंधित नहीं है बल्कि सम्पूर्ण देश तथा ब्रह्मंड को संबोधित है। श्री गुरु नानक देव जी ने जब विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा भारतवासियों पर किए गए अत्याचारों को अपनी आंखों से देखा तो उनका मन करुणा तथा दया से कुलबुला उठा। इस तरल संवेदना के अधीन उन्होंने अपने ईश्वर से करुणामयी बाणी में प्रार्थना की। इस प्रार्थना में पहली बार 'हिंदोसतान' शब्द आया। इससे पहले किसी संत, महात्मा, पीर-पैगंबर द्वारा सारे देश को सम्पूर्ण रूप में इस प्रकार नहीं देखा गया।

श्री गुरु अरजन देव जी ने इस विलक्षण धर्म-ग्रंथ का संपादन करके संपादन-कला के नए मापदंड स्थापित किए हैं और इस कला को सम्मानीय स्थान दिलवाया है। गुरु जी ने अपने सम्पादन में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वही बाणी रखी जो आध्यात्मिक होने के साथ-साथ मानव के लिए हितकारी तथा कल्याणकारी थी। इसी लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब प्रत्येक मानव को समर्थ नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता रखते हैं। मानवता का कल्याण ही इस महान ग्रंथ का उद्देश्य है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ

साहिब में विभिन्न धर्मों, जातियों तथा क्षेत्रों के भक्तों और संतों की बाणी को दर्ज करके यह संदेश दिया है कि संत और भक्त एक आत्म-सत्ता के विश्वासी हैं और एक ही ज्ञान-दीपक को जला रहे हैं।

श्री गुरु अरजन देव जी ने इन भक्तों और संतों की बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान देकर जहां इनको सम्मान दिया है वहीं उन्होंने राष्ट्रीय एकता और मानव की समता की भावना को भी सुदृढ़ किया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज सम्पूर्ण बाणी का उद्देश्य एक अच्छे जीवन का निर्माण है। यह तभी संभव है जब हम अपने अवगुणों को त्याग कर, गुणों को ग्रहण कर अपने जीवन को शुद्ध करें, जिससे हम लोक और परलोक में शोभा प्राप्त कर सकें। श्री गुरु नानक देव जी ने मानव को सत्य की बाणी सुनाई तथा निजस्वार्थ के त्याग और बलिदान का पाठ पढ़ाया। उनके सच्चे जीवन, बाणी तथा अनुभव ने विश्व भर के लोगों को खूब प्रभावित किया। आज गुरबाणी सम्पूर्ण मानवता के लिए हितकारी तथा कल्याणकारी सिद्ध हो रही है।

वैश्वीकरण के युग में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का महत्त्व और भी अधिक बढ़ गया है। इसमें मानव की प्रत्येक समस्या का वर्णन किया गया है और साथ ही उसका समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। आज मानव भौतिकवादी रुचियों के कारण भटक रहा है तथा पैसे के लोभ के कारण अपनी नैतिकता से दूर चला गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इस अवस्था का वर्णन शताब्दियों पहले किया गया है और उसका उपाय भी दिया गया है।

इस प्रकार अवलोकन करने के पश्चात यह कहा जा सकता है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सृजना का मूल उद्देश्य यही है कि जो जीवन के सभी क्षेत्रों में फैली अज्ञानता, अशांति, अस्थिरता, असंतुष्टि तथा असंतुलन पैदा हो गया है, उससे मुक्ति पाकर मानववादी जीवन-मूल्यों को स्थापित करके मानवता के कल्याण के लिए कार्य किया जाए।

कविता

आत्मा की पुकार

हे प्रभु!
तू रहीम है, रहमान है, करुणावान है।
मुझ पर ज्ञान की वर्षा कर दे!
इस सूखी भूमि पर ज्ञान बरसा दे!
मुझे ऐसी बख्श दे मनावस्था
आत्मा में ज्ञान का उदय कर दे!
कि मैं अपने भीतर डूब जाऊं
और फिर ज्ञान घटित हो जाए।
जैसे मेघ घिर आते नभ पर
और मोर नाचने लगते।
घटाएं घनघोर हो जाएं
और बिजली चमकने लगे।
मैं प्यासी धरती जैसी,
घनघोर मेघों का इंतजार करती हूं।
बांस की पोंगली में परमात्मा का,
गीत गाना चाहती हूं।
वह गीत बड़ा ही सूक्ष्म होगा, निःशब्द होगा,
ध्वनि-मुक्त होगा और ध्वनि-शून्य।
वह संगीत-शून्य का संगीत होगा
और संगीत को करीब से सुनते ही
मेरे प्राण महक-चहक उठेंगे,
जब होगी ज्ञान की छम-छम वर्षा।

-बीबा जसप्रीत कौर 'जस्सी', ८३, बसंत विहार, जवद्दी रोड, डुगरी, लुधियाना। मो : ९८१०४-३२८६९

श्री गुरु ग्रंथ साहिब

-स. करनैल सिंघ 'सरदार पंछी'*

गुरु ग्रंथ अलफ़ाज़[१] का वो सिलसिला है।
जो ज़मीं से अर्श तक फैला हुआ है।
एक ईश्वरवाद सीधा रास्ता है।
हर अंधेरे के लिये रौशन दीया है।
इसमें गुरुओं, सूफ़ी-संतों की है बाणी।
जो सिखाये पत्थरों को बाग़बानी।[२]
यह सिखाये आदमी को प्यार करना।
आपसी रिश्तों को भी सरशार[३] करना।
अपने-अपने हाथ को पतवार करना।
अपनी कश्ती खुद भंवर से पार करना।
खाओ अपने खूं-पसीने की कमाई।
अपनी मिट्टी से करो न बे-वफ़ाई।
ग्रंथ-बाणी रूह को सरशार कर दे।
और तपते सहरा[४] को गुलज़ार कर दे।
सो रहे जज़्बात[५] को बेदार[६] कर दे।
ऊंची-नीची सोच को हमवार[७] कर दे।
सब्र है इंसान की फ़ितरत[८] का गहना।
खूब है रब की रज़ा में शाद[९] रहना।
इस ज़मीं पर ज़िंदगी है एक कहानी।
आसमां, मिट्टी, हवा और आग, पानी।
ज़िंदगी इंसान की है आनी-जानी।
सिर्फ़ है तो आत्मा है जाविदानी।[१०]
अर्श पर जो बज रहा है साज़ सुन लो।
ज़िंदगी और मौत की आवाज़ सुन लो।

बाणी कर दे रूह को पुरनूर[११] ऐसा।
रह न पाये आदमी मग़रूर[१२] ऐसा।
होना है इंसान को मसरूर[१३] ऐसा।
बज रहा सदियों से है संतूर[१४] ऐसा।
लफ़्ज़ बाणी के सभी सुर ताल में हैं।
चांद-सूरज आरती के थाल में हैं।
बाणी अपनी ज़िंदगी की हमसफ़र है।
इसमें शामिल चांद-तारों की नज़र है।
इल्तजाएं[१५] दिल से वाक़िफ़ बाखबर[१६] है।
यह जो दे दे वो दुआ भी पुरअसर[१७] है।
नब्ज़े-इंसानी[१८] पे इसकी उंगलियां हैं।
धड़कनें ही कैफ़ियत[१९] की तर्जुमां[२०] हैं।
ग्रंथ गुरुओं, सूफ़ियों की अंजुमन[२१] है।
रंग-बिरंगे फूलों से महका चमन है।
हर ज़मीं के सर पे इक नीला गगन है।
जाविदां इक जज़्बा-ए-हुब्बे[२२] वतन है।
ख़िदमत-ए-इंसानियत तालीम इसकी।
इसलिये है चार सू ताज़ीम[२३] इसकी।
आओ इस बाणी को आंखों से लगा लें।
इसके इक-इक लफ़्ज़ को दिल में बसा लें।
नफ़रतें, बुग़ज़-ओ-हसद[२४] दिल से निकालें।
हर दुखी इंसान का हम दुख बंटा लें।
माथा टेकें और रहमत रब की पा लें।
सूफ़ी, संतों और गुरुओं की दुआ लें।

१. अलफ़ाज़ = शब्द, २. बागबानी = माली का काम, ३. सरशार = मस्त, ४. सहरा = मारूथल, ५. जज़्बात = भावनाएं, ६. बेदार = जगाना, ७. हमवार = बराबर, ८. फ़ितरत = स्वभाव, ९. शाद = प्रसन्न, १०. जाविदानी = अमर, ११. पुरनूर = उजाले से भरपूर, १२. मग़रूर = अहंकारी, १३. मसरूर = मस्त, १४. संतूर = एक साज़ का नाम, १५. इल्तजाए = प्रार्थना, १६. बाखबर = जानने वाला, १७. पुरअसा = प्रभावी, १८. नब्ज़े-इंसानी = आदमी की नाड़ी, १९. कैफ़ियत = दशा, २०. तर्जुमां = प्रवक्ता, २१. अंजुमन = सभा, २२. हुब्बे वतन = देश-प्रेम, २३. ताज़ीम = सम्मान, २४ बुगज़-ओ-हसद = ईर्ष्या

*नशेमन, पंजाब माता नगर, लुधियाना-१४१०१३ फोन : ०१६१-२५६४१६५

गुरु-चिंतन

-ज्ञानी संत सिंघ मसकीन

दुख और सुख

दुख एक व्यापक रोग है। इसकी मार से कोई भी जीव नहीं बच सका। मन किसी वस्तु की इच्छा करता है, जब प्राप्त नहीं होती तो दुख का जन्म होता है, क्योंकि इच्छाएं मनुष्य की बहुत हैं, इसलिए दुख भी अनगिनत (बेशुमार) हैं। जब एक इच्छा पूरी होती है तो और अनेकों ही इच्छाएं पैदा हो जाती हैं। ख्वाहिशों का बाकायदा दरिया मानव-अंत:करण के भीतर चलता रहता है। एक वस्तु की इच्छा भी बहुत दुख पैदा कर देती है :

आसा विचि अति दुखु घणा मनमुखि चितु लाइआ ॥
गुरमुखि भए निरास परम सुखु पाइआ ॥
(पन्ना १२४९)

हम देखते हैं कि निर्धन तो दुखी है ही धनवान भी दुखी है। गुणहीन जहां दुख में है वहां गुणवान भी दुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा है। बीमार का दुखी होना स्वाभाविक है, पर तंदरुस्त भी दुखी है। निर्बल अगर दुखी है तो बलवान भी दुखी है। इसलिए कहां तक लिखा जाए, दुख एक व्यापक रोग है।

हर एक की चाहत अलग-अलग है, इसलिए हर एक का दुख भी अलग-अलग है।

गांवों में गोबर के उपले घरों में जलाए जाते हैं जिसमें से धुआं निकल कर बाहर आ जाता है। पड़ोसी और राहगीर को पता चल जाता है कि इस घर में अग्नि जल रही है। किसी घर में लकड़ी का कोयला जलाया जा रहा है, धुआं लकड़ी के कोयले से भी पैदा होता है, इसलिए पता चल जाता है कि चूल्हा जल रहा है। मिट्‌टी के तेल का किसी घर में स्टोव जल रहा होता है, धुआं तो नहीं निकलता पर आवाज बता देती है कि स्टोव जल रहा है।

आज का मनुष्य हर काम वैज्ञानिक ढंग से करने लग पड़ा है। इसलिए आज इसने गैस के चूल्हे इजाद (अविष्कार) कर लिए हैं, जिसमें न तो धुआं है और न ही आवाज है। पड़ोसी और राहगीर को पता ही नहीं चलता कि इस घर में आग जल रही है।

जब हम कहते हैं कि फलां के घर में बहुत ही सुख है, आनंद ही आनंद है, उस समय हमें भ्रम हो जाता है। दरअसल उस घर में अंदर गैस के चूल्हे जल रहे हैं, धुआं बाहर नहीं आ रहा, इसलिए यह भ्रम पड़ जाता है।

जिस घर के दुख प्रकट हो जाते हैं पड़ोसी और राहगीर को पता चल जाता है, पर कई अंदर ही अंदर जल रहे होते हैं और देखने वाले उनको सुखी समझ लेते हैं। अगर ध्यान से देखें तो अंदर रोना छिपा हुआ है, हर खुशी गम को छुपाए बैठी है। इज्जत के साथ बे-इज्जती, नफे के साथ नुकसान और जीवन के साथ मौत जुड़ी हुई है। एक उर्दू के कवि का कहना है:

फूल खिलता है मुरझाने का तखईअल लेकर,
जिसे हंसता हुआ पाओगे वोह परेशां होगा ।

श्री गुरु नानक देव जी का यह संसार-प्रसिद्ध वाक्य है कि :

बाली रोवै नाहि भतारु ॥
नानक दुखीआ सभु संसारु ॥ (पन्ना ९५४)

दरअसल पदार्थों का मिल जाना सुख का मिलना नहीं है, परमात्मा का मिलना ही सुख का मिलना है :

सुखु नाही बहुतै धनि खाटे ॥
सुखु नाही पेखे निरति नाटे ॥ (पन्ना ११४७)

सुखों को केंद्र (मरकज) ईश्वर है। जब तक ईश्वर के साथ न जुड़ें, सुखों का रस नसीब नहीं होता। सो, ईश्वर का मिलना ही सुख का मिलना है और ईश्वर को भूलना ही महान दुख है :

ग़म चे बाशद ग़फ़लत अज़ यादे ख़ुदा।
चीसत शादी-याद आं ब मुतंहा। (दीवाने-गोया)

गुरु-घर के लाडले और अनुभवी शायर भाई नंद लाल जी यह कहते हैं कि जब इंसान रब को भूलता है बस उसी समय उसको गम आ घेरते हैं और ईश्वरी याद से सभी खुशियां मिल जाती हैं। श्री गुरु अरजन देव जी तो यह फरमाते हैं कि एक नहीं बल्कि सभी दुख उस समय आ चिपटते हैं जब मनुष्य प्रभु को भूलता है:

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥
(पन्ना १३५)

जीवन और मौत

तत्वों के योग से मानव शरीर के अंदर चल रही प्राणों की हरकत को जीवन कहा जाता है, इसलिए इस जीवन में मौत का भय बना रहता है।

अगर गहरे स्तर पर झांक कर देखें तो मांग जीवन की है और डर मौत का है। जितनी जीवन की चाहत प्रबल होगी उतना ही मौत का भय भारी होगा। जीवन बे-रस हो, शरीर जर्जर हो जाए, रोगों और दुखों के अलावा और कुछ न हो, तो भी मनुष्य जीवन चाहता है। जीवन की चाहत गहरी और बहुत प्रबल है। जीवन से ऊंची वस्तु जब तक प्राप्त न हो यह चाहत बनी रहती है और साथ ही मौत भयभीत रखती है।

अनंत काल से मनुष्य इस कोशिश में रहा है कि कोई ऐसी वस्तु मिल जाए जिससे मौत आए ही न और मैं सदैव जिंदा रहूं। जीवन की सारी शक्ति इस खोज में नष्ट होती रही कि मैं बहुत ज्यादा जी सकूं। जीवन सारा जिंदा रहने की चाहत में नष्ट हुआ। बड़े-बड़े योगी और तपीश्वर भी आयु लम्बी करने के साधनों में जुटे रहे। धनाढ्य इंसान भस्म खा, कमजोर शरीर को और जिंदा रखने के आहर (धंधे) में लगे रहे। जीवन लम्बा हो यह तो हर एक की कोशिश रही है, जीवन सफल हो सके और जीवन किस लिए है, इसकी चिंता किसी ने भी नहीं की। जीवन में से मौत निकल जाए यह हर एक की कोशिश रही है।

जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने जगत के सामने एक महान अनुभव रखा कि अगर मौत को खुशी-खुशी कबूल कर लिया जाए तो जीवन में से मौत का डर खत्म होने पर परम जीवन को मनुष्य प्राप्त होता है।

पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥
(पन्ना ११०२)

गुरबाणी में मानव-जीवन को एक पदार्थ, एक अवसर अथवा एक बहुत अमोलक रत्न कहा गया है। मूर्ख मन इस पदार्थ को मिट्टी में गंवा रहा है, अवसर हाथ में से गंवा रहा है और रत्न को कौड़ियों के मोल बेच रहा है:

--जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ (पन्ना ६७६)
--गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
(पन्ना १२)
--हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥
(पन्ना १५६)

नींद और मौत को बराबर कहा जाता है। जब मनुष्य गहरी नींद सो जाता है तब परिवार और संसार से सम्बंध टूट जाता है। मौत से भी सम्बंध टूट जाते हैं, पर नींद आए, मनुष्य दुखी नहीं होता, मौत आए तो रोता है।

नींद आते समय यह ख्याल बना रहता है कि जागने पर टूटे सम्बंध जुड़ जाएंगे, पर मौत से एक दफा सम्बंध टूट जाएं तो टूटे ही रहते हैं।

जीवन में जो रस और रौनक है, वह मां, बाप, भाई, बहन और स्त्री, बच्चों अथवा धन और पदार्थों की वजह से है। रिश्तेदार रक्षा के लिए चाहिए, धन गुजारे के लिए और पदार्थ रस प्राप्त करने के लिए।

जिस समय परमात्मा कुटुंब और सम्बंधी के रूप में दिखाई दे तो मनुष्य कुटुंब से ऊंचा हो जाता है और जब नाम (प्रभु) का धन मिल जाता है तब कंचन कांच के समान हो जाता है और जब नाम का पदार्थ मिल जाता है तब किसी पदार्थ में रस प्रतीत नहीं होता :

--तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता ॥
तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ॥ (पन्ना १०३)
--जा कउ मिलिओ नामु निधाना ॥
भनति नानक ता का पूर खजाना ॥ (पन्ना ३८५)
हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥ (पन्ना ३९४)

ऐसा कुटुंब, धन और पदार्थ मिल जाए तो मनुष्य मौत के भय से रहित हो जाता है और जीवन की चाहत खत्म हो जाती है।

(मसकीन जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए पुस्तक 'गुरु चिंतन' से)

ज़िंदगी और मौत

ज़िंदगी और मौत
जैसे दो जुड़वा बहनें
जैसे कांटों से घिरा गुलाब
जैसे कैक्टस में खिला फूल
जैसे लहरों पर खेलती नाव
जैसे छाया और धूप
कभी अपनों की, कभी परायों की
जिंदगी में झांकती हंसती-मुस्कराती मौत।
हां, मौत भी हंसती है
लगाती है कहकहे जब कभी कोई जिंदगी
मौत से भी बदतर हो जाती है
और मौत से मौत की भीख मांगती है।
ऐसा नहीं है कि जिंदगी नहीं हंसती
जिंदगी भी खिलखिलाती है अक्सर
मौत को हराकर जीत जाती है जिंदगी
आइस-पाइस के इस खेल में
हार-जीत के मेल में
वक्त की सीढ़ी फलांग
एक दिन बिछुड़ी हुई जुड़वा बहनों की तरह
गले मिल जाती है
हाथ थामे आगे बढ़ जाती है
और पीछे छोड़ जाती है
यादें कांटों भरे गुलाब की।
बिन देखे एक ख्वाब की
हां, यही सच है
जिंदगी और मौत आमने-सामने
जैसे दो जुड़वा बहनें।

('पंजाब सौरभ' से धन्यवाद सहित)

-प्रियंका गुप्ता, एम. आई. जी. २६२, कैलाश विहार, आवास विकास योजना, स. एक, कल्याणपुर, कानपुर-२०८०१७

अरदास किसके आगे और कैसे करें?

*-भाई किरपाल सिंघ**

अरदास मनुष्य के स्वभाव का एक अंग है। अरदास के बिना कोई नहीं रह सकता तथा किसी न किसी पड़ाव पर किसी न किसी रूप में अरदास करनी पड़ती है। परमात्मा में विश्वास रखने वाला या न रखने वाला मोमिन हो या काफिर, प्रभु को माने चाहे न, अपने-अपने ढंग से सभी अरदास करते हैं। अरदास की जरूरत तब पड़ती है जब कोई मनुष्य दुख-तकलीफ या लाइलाज रोग से मायूस हो या उसे कोई असाधारण शारीरिक या रूहानी अभिलाषा की पूर्ति करनी हो जिसे ग्रहण करने में वह असमर्थ होता है और या किसी कठिनाई का सामना करने के लिए बल की आवश्यकता हो। ऐसी दशाओं में जब वह महसूस करता है कि वह अपने यत्नों से ज्यादा प्राप्ति नहीं कर सकता तो एक निर्बल अवस्था में अरदास का आसरा लेता है। आम जिंदगी में हम देखते हैं कि एक विद्यार्थी अपने अध्यापक से मुश्किल सवालों को हल करने में मदद लेता है। बीमारी में एक रोगी को डॉक्टर से और एक नौकर को अपने मालिक से तथा अन्य को इस तरह की आशाएं जीवन में बनी रहती हैं। इस तरह की मदद मांगना ही अरदास के भिन्न-भिन्न रूप हैं। इस तरह की रोजाना की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक बच्चा अपने माता-पिता तथा एक स्त्री अपने पति की तरफ देखती है। तरह-तरह की समस्याओं से जूझते हुए जब हम असफल हो जाते हैं तो केवल अरदास ही आखिरी हथियार रह जाता है तथा इसका इस्तेमाल आवश्यक हो जाता है। जहां इंसान की सारी कोशिशें नाकाम हो जाती हैं वहां अरदास ही सफल होती है।

दुनिया जिन चीजों की कल्पना ही करती है अरदास से उससे भी ज्यादा चीजों की प्राप्ति की जा सकती है। यदि इंसान परमात्मा के अस्तित्व को जानते हुए भी अपने या अपने दोस्तों पर मुसीबत पड़ने पर अरदास के लिए हाथ नहीं जोड़ता तो यह समझो कि उसका अपने परमात्मा में विश्वास अभी कच्चा है। अरदास जीवन का जरूरी और मुख्य तत्व है तथा हम इसके बिना नहीं रह सकते। तो अरदास किसके आगे करें? स्वाभाविक ही इसका उत्तर होगा कि सर्वशक्तिमान परमात्मा या उस सत्य पुरुष के आगे जिसमें उसकी सारी ताकतें विराजमान हैं तथा जिसके द्वारा परमात्मा इस संसार पर काम करता है। अरदास, कर्त्ता और उसकी कायनात, प्रभु तथा मनुष्य के मध्य कड़ी का काम करती है। यह जिज्ञासु के लिए आधार है तथा श्रद्धालु इसके बिना रह नहीं सकता, क्योंकि शुरू से आखिर तक यह उसे जीवन के खतरों से पार करती है तथा मन को शक्ति प्रदान करती है :

बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि ॥ नानक जोरु गोविंद का पूरन गुणतासि (पन्ना ८१९)

अरदास किस आगे की जाए?

प्रत्येक को केवल सर्वव्यापक, जो सबकी

२२१, सेक्टर-१८, पंचकूला (हरियाणा)

इच्छाएं पूरी करने की सामर्थ्य रखता है, के आगे ही अरदास करनी चाहिए। सभी देवी-देवताओं की शक्तियां तथा दायरा सीमित है। वे अपनी शक्ति खुद परमात्मा से हासिल करते हैं तथा केवल अपने घेरे में ही चीजें दे सकते हैं और निश्चित है कि वे जीव को मुक्ति प्रदान नहीं कर सकते, केवल अकाल पुरख ही मुक्ति प्रदान कर सकता है। श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं :

आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥
तसै आगै नानका खलिइ कीचै अरदासि ॥
(पन्ना १०९३)

हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ ॥
जे दूजे पासहु मंगीऐ ता लाज मराईऐ ॥
(पन्ना ५९०)

परमात्मा ही सारी समस्याओं का हल है। चाहे वे किसी भी तरह की हों--शारीरिक (दर्द तथा कई प्रकार की बीमारियां,), सूक्ष्म (अचानक घटित होने वाली घटनाएं, जैसे दुर्घटना, बिजली का गिरना, तूफान, बाढ़ एवं भूकंप आदि) तथा कारन (छिपे विकार, जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) आदि। श्री गुरु अरजन देव जी फरमाते हैं :

तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि ॥
ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ आगै अरदासि ॥ (पन्ना ७१४)

श्री गुरु अरजन देव जी आगे फरमान करते हैं :

--सुखदाता भै भंजनो तिसु आगै करि अरदासि ॥
मिहर करे जिसु मिहरवानु तां कारजु आवै रासि ॥
(पन्ना ४४)

--एको जपि एको सालाहि ॥
एकु सिमरि एको मन आहि ॥
एकस के गुन गाउ अनंत ॥
मनि तनि जापि एक भगवंत ॥
एको एकु एकु हरि आपि ॥
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥
अनिक बिसथार एक ते भए ॥
एकु अराधि पराछत गए ॥
मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥
गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥ (पन्ना २८९)

गुरु का खालसा वही है जो अकाल पुरख के अतिरिक्त किसी का सहारा नहीं लेता। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी फरमाते हैं :

जागत जोति जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आनै ॥
पूरन प्रेम प्रतीत सजै ब्रत गोर मड़ी मठ भूल न मानै ॥
तीरथ दान दइआ तप संजम एक बिना नहि एक पछानै ॥
पूरन जोति जगै घट मै तब खालसा तांहि निखालस जानै ॥ (दसम ग्रंथ)

श्री गुरु रामदास जी फरमाते हैं :

कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ॥
कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥
संता संगि निधानु अंम्रितु चाखीऐ ॥
भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ॥
(पन्ना ९१)

श्री गुरु अरजन देव जी अरदास करते हैं:

--तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥
कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥ (पन्ना ३८३)

--मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि ॥
मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनंती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि ॥ (पन्ना ७३५)

--जिसु मानुख पहि करउ बेनती सो अपनै दुखि भरिआ ॥

पारब्रहमु जिनि रिदै अराधिआ तिनि भउ सागरु तरिआ ॥ *(पन्ना ४९७)*

अपनी मदद के लिए हमको केवल प्रभु को ही पुकारना चाहिए, क्योंकि उसे पुकारना ही सच्चा पुकारना है। केवल अपने परमात्मा को ही पुकारें तो खाली हाथ नहीं रहेंगे।

गुरु परमात्मा के प्रकाश का संचार-केन्द्र है। अत: हम गुरु के आगे अरदास कर सकते हैं, क्योंकि वह प्रभु से जुड़ा और उसके साथ एकरूप है, क्यों जो उसका प्रभु से सीधा सम्बंध है तथा उसकी अपार शक्ति उसके पीछे होने के कारण ही वह प्रभु की तरह ही हम सबकी इच्छाओं की पूर्ति करने में समर्थ है। इसी लिए कहा गया है :

साध रूप अपना तनु धारिआ ॥ (पन्ना १००५)

अर्थात् परमात्मा अपने आप को अपने संत-भक्त-जनों के रूप में प्रकट करता है।

गुरबाणी का फरमान है :

प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ (पन्ना २६३)

सतिगुरु के मुख से निकले वाक्य असल में परमात्मा के ही होते हैं, इसलिए सतिगुरु के आगे की गई अरदास उतनी ही कारगर है जैसे प्रभु के आगे की हो।

इसलिए हम सबको अपने गुरु पर पूर्ण निर्भर होना चाहिए और अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु उसके आगे अरदास करनी चाहिए।

सब अरदासें केवल एक को ही संबोधित होनी चाहिए, जिसके हाथ में जीवन तथा मृत्यु का भेद है। हमारा पूरा ध्यान उस पर केन्द्रित होने के कारण हमको किसी और का ख्याल नहीं करना चाहिए। यह प्रभु के साथ सम्पर्क स्थापित करने का एक ढंग है। गुरु बादशाहों का बादशाह है, क्योंकि दुनिया भर के बड़े-बड़े शहंशाह उसके दर पर चिरकाल तक चलने वाली इच्छाओं और उनके द्वारा प्राप्त न होने वाली मांगों की पूर्ति हेतु प्रार्थना करते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी इस प्रकार फरमाते हैं :

जा कै वसि खान सुलतान ॥
जा कै वसि है सगल जहान ॥
जा का कीआ सभु किछु होइ ॥
तिस ते बाहरि नाही कोइ ॥१॥
कहु बेनंती अपुने सतिगुर पाहि ॥
काज तुमारे देइ निबाहि ॥१॥रहाउ॥
सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥
सगल भगत जा का नामु अधारु ॥
सरब बिआपित पूरन धनी ॥
जा की सोभा घटि घटि बनी ॥२॥
जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै ॥
जिसु सिमरत जमु किछू न कहै ॥
जिसु सिमरत होत सूके हरे ॥
जिसु सिमरत डूबत पाहन तरे ॥३॥
संत सभा कउ सदा जैकारु ॥
हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ॥
कहु नानक मेरी सुणी अरदासि ॥
संत प्रसादि मो कउ नाम निवासि ॥
(पन्ना १८२)

चारों पदार्थों (धर्म, अर्थ, काम तथा शक्ति) में से कोई किसी की भी इच्छा हो तो उसे सतिगुरु की सेवा करनी चाहिए :

चारि पदारथ जे को मागै ॥
साध जना की सेवा लागै ॥
जे को आपुना दूखु मिटावै ॥
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥
जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
साधसंगि इह हउमै छोरै ॥
जे को जनम मरण ते डरै ॥
साध जना की सरनी परै ॥ *(पन्ना २६६)*

उपरोक्त से स्पष्ट है कि हमें अकाल पुरख

अथवा सतिगुरु के आगे ही अरदास करनी चाहिए तथा उससे सम्पर्क होने के बाद हमें केवल उसकी ताकत पर ही भरोसा करना चाहिए, अन्य किसी पर नहीं, क्योंकि वही एक शक्ति है जो हमें मन-माया के भंवरजाल में फंसने से बचाती है और इच्छाओं की तड़पन से जकड़े हुए हमारे दिलों को ढांढस दे सकती है। वही निर्बलों के लिए बल है। जिंदगी में उलझे हुए प्राणी के लिए डूबते को तिनके का सहारा है तथा बेघरों के लिए आशियाना है। उसकी दया भरी दृष्टि ही टूटे दिलों को जोड़ देती है।

सतिगुरु ही हमारे रोग को पहचान कर हमारा इलाज करते हैं तथा इस प्रकार जीवन में चेतना की लहर ला देते हैं। इस प्रकार सिक्ख का फर्ज है कि बिना किसी झिझक के अपने दिल का सारा हाल अपने गुरु के आगे बयान करे, क्योंकि वह सदैव पास होता है और अरदास के समय ही वह अपने सिक्ख के दुखों को सुनता है तथा उसका इलाज भी करता है। हमको अपनी सांसारिक चतुराइयां छोड़कर केवल पूर्ण समर्पण करना होता है :

जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि ॥
छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि ॥
(पन्ना ५१९)

केवल सतिगुरु ही सारी सौगातों के भंडार हैं, इसलिए हमें उनके सिवा किसी और से कुछ मांगना नहीं चाहिए।

फूल से

हे कोमल, रेशम से सुंदर पुष्प!
कहो कैसे हो?
लौ संग बाती ज्यों झिलमिल,
क्या तुम भी वैसे हो?
बीती रात संग मिट जाएगी,
दीपक की छाया भी।
दिन ढलते ही ढल जाएगी,
पुष्प तेरी काया भी।
हे फूल! है पलों का जीवन,
फिर कैसे मुस्काते हो?
ले सुवास अंतर में अपने,
दिशा-दिशा महकाते हो।
मूढ़मति मानव हम कितने,
जीने का दम भरते!
वर्षों की आयु लेकर भी,
जीवन में क्या करते?
कलह, द्वेष, हिंसा की ज्वाला,
प्रतिपल हम धधकाते।
न जीते, न जीने देते,
भाई-भाई लड़वाते।
हे सुमन! सजीले डाली के,
है धन्य तुम्हारा जीवन।
जीने की है कला अनूठी,
है तेरा अभिनंदन।
काश! तुम्हीं-सा पावन सुंदर,
यह जीवन हो जाए।
अल्प समय हो चाहे कितना,
सार्थक तो बन जाए।

-सुकीर्ति भटनागर, ४३२, अरबन अस्टेट, फेज़-१, पटियाला।

हमारी ऐतिहासिक धरोहर - गुरुद्वारा साहिबान

-डॉ. आशा अनेजा*

श्री गुरु नानक देव जी पंजाब के भक्तिकालीन आंदोलन अथवा गुरमति लहर के प्रवर्त्तक थे। उनका जन्म जिला शेखूपुरा के तलवंडी गांव में सन् १४६९ ई में हुआ। श्री गुरु नानक देव जी ने जात-पात, कर्मकांड और पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष का विरोध किया। उन्होंने अहंकार का त्याग, गुरु की खोज, ज्ञान-जप द्वारा सरल मार्ग से परमात्मा की खोज का रास्ता बताया। उन्होंने लंबी प्रचार-यात्राएं कीं। वे भारत के तीर्थ-स्थानों और मक्का मदीना तक गये। अपने उपदेशों द्वारा उन्होंने भटके हुए जनमानस को सही मार्ग दिखाया। गुरु जी अपनी यात्राओं के समय जहां प्रचार करने के लिए जाते वहां 'सिक्ख संगत' कायम कर देते। संगत के बैठने के लिए, कीर्तन-कथा करने के लिए धर्मशाला कायम करते, जिनको बाद में गुरुद्वारे कहा जाने लगा। प्रत्येक गुरुद्वारा साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश होता है। ग्रंथी संगत को बाणी पढ़ कर सुनाते हैं। सुबह-शाम दोनों समय का कीर्तन होता है। गुरु का लंगर होता है। प्रत्येक आने वाला यात्री नि:शुल्क लंगर छकता है। बिना किसी भेदभाव के लंगर के स्थान पर आटा, दाल, सब्जी, नमक, घी व अन्य सामान दिया जा सकता है। हाथ से सेवा करना, गुरुद्वारा साहिब को साफ रखना बहुत उत्तम माना जाता है।

गुरुद्वारा साहिब में आने-जाने वाले यात्रियों के ठहरने यानि रात को सोने की भी व्यवस्था होती है। इन यात्री-निवासों में यात्री आराम करते हैं। कई गुरुद्वारा साहिबान के साथ पाठशालाएं बनी होती हैं। कई गुरुद्वारा साहिबान मुफ्त दवा-घर चलाते हैं। जिन लोगों का घर-बार नहीं होता उन बेसहारों को गुरुद्वारा साहिबान में स्थान व आश्रय मिलता है। गुरुद्वारा साहिबान सिक्ख कौम के इतिहास से सम्बंध रखते हैं। गुरुद्वारा साहिबान के खर्च चलाने के लिए गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटियां बनी हुई हैं। इन कमेटियों में सब से बड़ी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर है। गुरुद्वारा साहिबान की लाखों रुपयों की सम्पत्ति इन कमेटियों के हाथ में होती है जिनका ये कमेटियां उचित रख-रखाव तथा प्रबंध करती हैं।

इस तरह गुरुद्वारा साहिबान सिक्ख धर्म और जीवन में बहुत महत्त्व रखते हैं। गुरमति का प्रचार करने वाले गुरुद्वारा साहिबान श्रद्धा और विश्वास का आधार हैं। कुछ गुरुद्वारा साहिबान ऐतिहासिक हैं। ऐसे ऐतिहासिक और प्रसिद्ध गुरुद्वारों के बारे में सभी को जानकारी होनी चाहिए, जो इस प्रकार हैं:

१. श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर

श्री अमृतसर में अमृत सरोवर का निर्माण श्री गुरु रामदास जी ने आरंभ करवाया तथा श्री गुरु अरजन देव जी ने इसे सम्पूर्ण करवाया। सरोवर के बीच श्री हरिमंदर साहिब सुशोभित है। स्वर्ण से बने इस गुरुद्वारा साहिब में सोने और संगमरमर के पत्थर की सेवा

*३०६/१, खुड्ड मोहल्ला, ओल्ड सिविल अस्पताल रोड, लुधियाना-१४१००८; मो: ९४१७९७७२००

महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा करवाई गई थी। इस गुरुद्वारा साहिब के अतिरिक्त श्री अमृतसर में और भी प्रसिद्ध गुरुद्वारा साहिबान हैं।

२. गुरुद्वारा ननकाणा साहिब

श्री गुरु नानक देव जी की जन्म-स्थली पर बना यह गुरुद्वारा पश्चिमी पंजाब, पाकिस्तान में है। ननकाणा साहिब में और भी कई गुरुद्वारा साहिबान हैं। यहां पर सिक्ख संगत जत्थों के रूप में जाती है।

३. गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब

श्री गुरु नानक देव जी ने अंहकारी वली कंधारी का अंहकार इसी स्थान पर तोड़ा था। वली कंधारी ने इसी स्थान पर भाई मरदाना जी को पानी पिलाने से मना कर दिया था और गुरु जी ने भाई मरदाना जी की प्यास बुझाने के लिए झरने का स्थान ही परिवर्तित कर दिया जिससे वली कंधारी गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। यह गुरुद्वारा साहिब हसन अबदाल, पश्चिमी पंजाब, पाकिस्तान में है।

४. गुरुद्वारा बाउली साहिब, गोइंदवाल साहिब

ब्यास नदी के किनारे गोइंदवाल में स्थित यह गुरुद्वारा श्री गुरु अमरदास जी के नाम पर प्रसिद्ध है। यहां पर गुरु जी ने बाउली अर्थात् जलकुंड का निर्माण करवाया था तांकि प्यासे लोगों को आत्मिक तृप्ति मिल सके।

५. गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, तरनतारन

श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा निर्मित यह गुरुद्वारा तरनतारन में स्थित है। यहां बहुत बड़ा सरोवर है।

६. गुरुद्वारा बंगला साहिब

यह गुरुद्वारा दिल्ली में स्थित है। इस स्थान पर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने निवास किया था। श्रद्धालु राजा मिर्जा जय सिंह ने गुरु जी के निवास के लिए सुंदर बंगले का निर्माण करवाया था जो 'बंगला साहिब' गुरुद्वारे के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

७. श्री रकाबगंज साहिब, दिल्ली

चांदनी चौक के पास श्री गुरु तेग बहादर जी की याद में इस सुंदर गुरुद्वारा साहिब का निर्माण हुआ। इस स्थान पर भाई लक्खी शाह ने नवम गुरु जी के 'धड़' का अंतिम संस्कार किया था।

८. गुरुद्वारा शीशगंज साहिब, श्री अनंदपुर साहिब

बहुत साहस के साथ दिल्ली से भाई जैता जी मुगलों के कब्जे से श्री गुरु तेग बहादर जी का 'शीश' लेकर आये थे। इसी स्थान पर पूरे सम्मान के साथ उन्होंने शीश का संस्कार किया था।

९. तख्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब

सन् १६९९ में वैसाखी के दिन यहां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पांच प्यारों को चुना था और खालसा पंथ की स्थापना की थी। यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की स्मृति में बना गुरुद्वारा है। होले महल्ले पर यहां संगत बहुत बड़ी संख्या में एकत्र होती है।

१०. गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, मुक्तसर साहिब

यहां पर माई भागो तथा भाई महां सिंघ सहित ४० सिंघों ने मुगल फौज के साथ युद्ध किया था। यहां बहुत बड़ा सरोवर है। युद्ध में हुए शहीदों का संस्कार भी यहीं हुआ था। यहां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने शहीद शूरवीरों को सम्मानित किया था।

११. तख्त श्री हजूर साहिब, नांदेड़

दक्षिण में गोदावरी नदी के किनारे नांदेड़

शहर के पास श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का वह पवित्र स्थान है जहां पर वे अकाल ज्योति में समा गये थे। यहीं पर गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरगद्दी प्रदान की थी तथा यह कहा था कि उनके बाद कोई देहधारी गुरु नहीं होगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब ही ज्योति-स्वरूप होंगे।

१२. तख्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब

यहां पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पावन प्रकाश हुआ।

१३. गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब, नाहन (हिमाचल प्रदेश)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यहां पर किले का निर्माण करवाया था। भंगाणी का युद्ध भी इसी स्थान के पास हुआ था।

१४. गुरुद्वारा श्री कत्लगढ़ साहिब, चमकौर साहिब

सरसा नदी के दूसरे पार चमकौर साहिब में बुधी चंद की कच्ची गढ़ी थी। यहां पर गुरु जी के बड़े साहिबजादों तथा चालीस सिंघों ने १० लाख फौज का सामना किया था और शहीदियां प्राप्त की थीं। साहिबजादा अजीत सिंघ जी तथा साहिबजादा जुझार सिंघ जी के तीरों से मुगल फौज 'बचाओ-बचाओ' पुकारने लगी थी। यहीं पर ही दोनों साहिबजादे शहीद हुए थे।

१५. गुरुद्वारा श्री फतहगढ़ साहिब

यहां पर माता गुजरी जी तथा दोनों छोटे साहिबजादों--बाबा जोरावर सिंघ जी तथा बाबा फतह सिंघ जी को कैद किया गया। दोनों साहिबजादों को दीवार में जिंदा खड़ा करके शहीद कर दिया गया तथा माता गुजरी जी को बुर्ज से नीचे गिरा कर शहीद कर दिया गया।

१६. गुरुद्वारा बाला साहिब, दिल्ली

यमुना तट पर बने इस स्थान पर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार हुआ था। बाद में यहीं पर माता साहिब कौर तथा माता सुंदरी जी का भी संस्कार हुआ।

१७. तख्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो, बठिंडा

जिला बठिंडा में दशमेश पिता जी का गुरुद्वारा है। यहां गुरु जी ने भाई डल्ला सिंघ की परीक्षा ली थी। उन्हें अमृत छका कर सिंघ बनाया था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की 'बीड़' गुरु साहिब ने यहीं पर लिखवाई थी।

१८. गुरुद्वारा पा: १०, आलमगीर, लुधियाना

इस स्थान पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने विश्राम किया था। इस सुंदर गुरुद्वारा साहिब में सरोवर भी बना हुआ है।

१९. गुरुद्वारा गऊघाट, लुधियाना

यहां पर प्रथम पातशाही श्री गुरु नानक देव जी पधारे थे। नाले के किनारे बने इस स्थान पर लोगों ने गुरु जी को बताया था कि बारिश के दिनों में नाले से बह कर तेज बहाव में आता पानी लुधियाना का बहुत नुकसान करता है। गुरु जी ने उस नाले को बूढ़ा हो बहने का हुक्म दिया। तब से वहां नाले का उफान कम हो गया।

इनके अतिरिक्त और भी बहुत-से प्रसिद्ध तथा ऐतिहासिक गुरुद्वारे हैं जो हमें अपने गुरु साहिबान के जन्म, शहीदी तथा विस्माद बख्शने वाली घटनाओं को बताते हैं। गुरुद्वारा साहिबान हमारे में असीम श्रद्धा तथा विश्वास को जन्म देते हैं। ये वही द्वार है जहां प्रत्येक व्यक्ति का सिर और मन श्रद्धा से नत होता है तथा उसके जीवन में आशा का संचार होता है। यहीं से ही वह गुरु-घर की खुशियों को प्राप्त करता है।

विस्मादी प्रदेश : पंजाब

*-श्री राम सहाय वर्मा एडवोकेट**

पूरा पंजाब तो नहीं घूमा, पर पंजाब की आत्मा शहर 'अमृतसर' अवश्य गया हूं। यही वो शहर है जिसके लिये कहा जाता है कि यहां वही व्यक्ति आता है जिस पर गुरु की कृपा होती है। सिक्ख संस्कृति का केन्द्र अमृतसर हम सब के लिए तीर्थ है और देश की सीमा के निकट स्थित एक सतर्क और सजग प्रहरी है। अमृतसर में फौजी छावनी भी है।

पंजाब, एक हरा-भरा प्रदेश है। जमीन का कोई टुकड़ा वहां खाली पड़ा नहीं मिलेगा। बड़ी-बड़ी इमारतों के आसपास दूर तक फैले हुये हरे-भरे खेत। वीरों की इस भूमि में हरियाली को देखकर ही शायद पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने "जय जवान, जय किसान" का नारा दिया था। पंजाब जवानों और किसानों का प्रदेश है। पंजाब का सफेद दाढ़ी वाला सरदार भी अपने आपको बूढ़ा नहीं मानता।

पंजाब के हंसते-बोलते शहर में हंसी-ठिठोली करते युवाओं को देखकर साठ साल पहले पढ़ी हुई पंडित चंद्रधन शर्मा गुलेरी की कहानी "उसने कहा था" मन के चित्रपट पर साकार हो गई। पंजाब शायद पहला प्रदेश है जिसके शहरी जीवन पर आधारित एक कहानी और साथ ही मात्र एक-दो कहानी लिखकर ही किसी लेखक ने हिन्दी साहित्य में एक सम्माननीय स्थान बना लिया है। पंजाब शौर्य, साहित्य और संस्कृति का संगम है।

सिक्खों के धर्म-स्थान 'गुरुद्वारा साहिब' कहलाते हैं। गुरुद्वारा साहिब में एक ऊंचे आसन पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब आसीन हैं। श्री ग्रंथ साहिब ही गुरु हैं इसी लिये सम्मान के साथ 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' कहा जाता है। गुरुद्वारा साहिब में आने वाला हर श्रद्धालु यहां माथा टेकता है। यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ होता रहता है। प्रसाद की व्यवस्था अलग है। गुरुद्वारे के साथ लंगर की व्यवस्था होती है। यहां भोजन को भी प्रसाद की तरह लिया जाता है और पंजाबी भाषा में 'परशादा' कहा जाता है। लंगर में रोटी, दाल और सब्जी बनती है। रोटी तवे की, बिना घी लगी हुई। लंगर में भोजन करते समय परशादा लेना हो तो दोनों हाथ फैलाकर परशादा लो। परशादे को कभी बरतन में नहीं डाला जाता है। रोटी के प्रति यह आदर-भाव केवल गुरु के लंगर में ही देखने को मिलता है। वैसे भी लंगर की व्यवस्था सामाजिक समरसता और धर्मनिरपेक्ष भावना पर आधारति होती है। यहां कोई छोटा-बड़ा और ऊंचा-नीचा नहीं होता।

पंजाब बहादुर और मेहनतकश लोगों का प्रदेश है। एक बहादुर आदमी अधिक मानवीय और संवेदनशील होता है। मेहनतकश आदमी ईमानदार होता है। वह भ्रष्ट अथवा बेईमान नहीं होता। इसी लिए कभी अपने आसपास किसी सिक्ख साथी को देखता हूं तो सोचता हूं कि कम से कम एक व्यक्ति तो है जिस पर

**दौलत गंज, लश्कर, ग्वालियर-४७४००१ (म. प्र.), फोन : ०७५१-२६२२९३३*

भरोसा किया जा सकता है।

पंजाब 'गुरुओं' का प्रदेश है। वहां का सिक्ख 'गुरु' पर ही निश्चय रखता है। जब भी ईश्वर का स्मरण हो तो सिर्फ "वाहिगुरु" कहता है। गुरु को तो हमने भी पूजा है और गोविंद से अधिक महत्व दिया है पर मध्य प्रदेश के सरकारी तंत्र में वेतनभोगी मास्टरों को भी 'गुरु जी' कहना शुरू कर दिया गया। पता नहीं यह 'गुरु' शब्द का अपमान है या मास्टरों का मजाक है? खैर, मैं सरकार की आलोचना नहीं करता। वैसे भी समरथ कभी दोषी नहीं होता।

मैं 'गुरु' की बात कर रहा था। वह 'गुरु' जो सिर्फ चेतना को जागृत करता है। उसका सांसारिक शिक्षा और दुनियावी बुद्धि से कोई संबंध नहीं होता। 'गुरु' से सिर्फ रूहानी ज्ञान प्राप्त होता है, सांसारिक बुद्धिमानी नहीं। इन्हीं शब्दों के साथ सच्चे 'गुरु' को नमन करता हूं।

चिड़िया! तुम अब चहचहाती क्यों नहीं?

चिड़िया! तुम अब,
पहले की तरह चहचहाती क्यों नहीं?
सुबह-सुबह अपनी कलरव से,
अब तुम सबको जगाती क्यों नहीं?
घर-आंगन में अब तुम,
मधुर राग गाती क्यों नहीं?
पेड़ों की फुनगियों पर फुदक-फुदक कर,
जीवन का नवसंदेश सुनाती क्यों नहीं?
सखियों संग नीले आकाश में कतारबद्ध उड़ती,
सबको अनुशासन अब सिखाती क्यों नहीं?
कंकरीट के जंगलों की भूलभुलैया में उलझे,
पल-पल प्रकृति से विमुख होते मानव को,
प्रकृति-प्रेम का पाठ फिर से तुम पढ़ाती क्यों नहीं?
मानव की सुषुप्त संवेदनाओं को,
अपनी मीठी वाणी से, एक बार फिर से,
तुम जगाती क्यों नहीं?
दम तोड़ रही मानवता में,
नव-प्राण एक बार फिर से,
तुम जगाती क्यों नहीं?
मानव से अपने जन्म-जन्मांतरों के रिश्ते को,
तुम अब निभाती क्यों नहीं?
चिड़िया! तुम अब, पहले की तरह चहचहाती क्यों नहीं?

-डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही', एस. ए. जैन कॉलेज, अंबाला शहर (हरियाणा)।

प्रभु-रजा में रहना सच्चे सुख का जामिन

-श्रीमती नीलू भ्राणी*

प्राणी को तकलीफ या अशांति क्यों होती है? इसलिये कि एक मालिक में यकीन नहीं है। अगर है तो बहुत थोड़ा-सा, वो भी बार-बार डोलता रहता है। अपने को कर्त्ता मानता है। क्या शरीर सचमुच कुछ करता है या कर सकता है? नहीं, नहीं! अगर यह कुछ कर सकता होता तो मर कर भी करता होता। यह जानते हुये भी कि मेरे चिंता करने से कुछ नहीं होना है, फिर भी कुछ न कुछ चिंता करता ही रहता है कि मेरा क्या बनेगा? ऐसी चिंता कितनी फजूल है! हे भाई! वही बनेगा जो प्रभु की मर्जी होगी और क्या बनेगा, मजबूर क्या कर सकता है?

एक आस राखहु मन माहि ॥
सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥ (पन्ना २८८)

कितना सच है! अब तो प्रत्यक्ष देख लिया है। होता वही है जो मालिक को मंजूर होता है, लेकिन हमारा कितना वक्त और ताकत इन कोशिशों में जाया/व्यर्थ हो जाती है कि ऐसा ही हो। कितनी अजीब बात है कि हम दरिया के बहाव (मालिक की मर्जी या हुक्म) के साथ चलने के बजाय दरिया के उल्टी तरफ चलने की कोशिश करते रहते हैं! फिर अशांति और तकलीफ न मिलेगी तो और क्या होगा? अगर शांति चाहिये तो एकदम बगैर किसी शर्त के मालिक के हुक्म के आगे सिर झुका दो। हम भगवान को यह कहते हैं कि हमें कोई दुख न मिले। अत: इंसान ज्यादा मुसीबत को सहन नहीं कर सकता, जबकि हर मुसीबत में एक नई रहमत लिपट कर आती है। मालिक प्रभु अपनी रहमत से इशारा भी करते हैं कि 'ऐ इंसान! तुम्हें जो भी दुख दिया है मैंने दिया है और मैं ही इसे जब चाहूंगा वापस ले लूंगा। इसलिये रहमत का इंतजार कर, शुक्र और सब्र का सहारा ले।'

इस रूहानी रास्ते में देखो कि अपने में कोई गुण है भी या नहीं? जीवन किसका है? भगवान का। देखना किसका है? भगवान का। सुनना किसका है? भगवान का। जानना किसका है? भगवान का। चलना किसका है? भगवान का। अब फैसला करें कि हमारा क्या है? कुछ भी नहीं। सब गुण उसी के हैं और उनमें वो आप ही है। ऐसा ही उसका होना है जो हमेशा ही है। इसी में सच्चा सुख आनंद है।

नौ द्वार सभी के पास हैं। लोग दसवां द्वार तलाश कर रहे हैं जो कि गुप्त रखा गया है। वह दसवां द्वार तो हरि आप ही है, जिसके ज्ञान का इन नौ द्वारों में हर वक्त विकास होता रहता है, जो अखंड, अविनाशी और सर्वव्यापक, समर्थ एवं हर एक के अंग-संग है, उसकी आराधना से ही जान छूटती है इधर-उधर घूमने से नहीं।

एक आस राखो मन माही ॥ (पन्ना २८८)

कितनी मुसीबत की बात है कि रूहानी प्रेरणा तो हमको कह रही है कि केवल प्रभु का

*प्रबंधक, मिलवरतन सीनियर सिटीजन होम, मून एवेन्यू, मजीठा रोड, श्री अमृतसर। फोन : ०१८३-२५०३२६४

ही आसरा लो, तमाम बक-बक से छूट जाओगे। लेकिन क्षमा करना, हमारा व्यवहार तो कुत्तों की तरह दर-दर मारे-मारे फिर कर भटकना है। फिर होता क्या है? जहां जाते हैं दुत्कारे जाते हैं। ऐसा क्यूं न हो? वैसे हमने तो कुत्ते से भी सबक नहीं लिया। देखा नहीं, जब कोई कुत्ता दूसरे कुत्तों की गली में आता है, किस बुरी तरह से इसको वापस करते हैं कि क्यों मालिक का दर छोड़ कर आया है और हमारी कौम को बदनाम किया है! वापस जाओ। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का कथन है :

सुआमी को ग्रिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥
नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इक चिति ॥ *(पन्ना १४२८)*

यह गुरु-मंत्र हम सबका कल्याण करता है:

जो तुधु भावै साई भली कार ॥ *(पन्ना ३)*

इसको जीवन में ढालने से भगवान के साथ पूर्ण सुलह हो जाती है और एक दम शांति के चश्मे बहने लगते हैं। गोया कि मंजिल प्राप्त हो जाती है और यह मालिक की रहमत या बख्शिश से ही बहती है और मिलती है।

मुरशिद और मुरीद का क्या ताल्लुक़ और रिश्ता है? वही जो गुरु नानक साहिब का भाई लहिणे के साथ और शमस तबरेज का मौलाना रोम के साथ था।

हम मौसम की तरफ न देखा करें, इसको बदलने वाले की तरफ देखा करें। अगर सारा जहान बर्फ से भर जाये तो सूर्य की तपिश एक ही नजर से उसको पानी-पानी कर देगी। ख्यालात जो दिल और दिमाग में बैठ चुके हैं, जो तबीयत बन चुकी है वह कैसे बदलेगी? कमजोर शरीर से भक्ति कैसे होगी? इस सबका इलाज एक ही है, एक ही जवाब है--रहमत से, रहमत से, रहमत से। "तेरे भाणे सरबत्त दा भला" कहने-मानने से।

कविता

बुढ़ापा

प्रत्येक जिंदगी में आता रहा बुढ़ापा।
वे काम कर दिए थे, जो आसमान छूते।
होता हमें अचंभा, वे थे अजीब बूते।
अब क्यों खिसक गए वे, सारा शरीर कांपा?
अल्हड़पना रहा था, चलते सदा ठहाके,।
सौंदर्य से लबालब, तन थे तमाम बांके।
कंकाल बन गए अब, सह कर अचूक थापा।
सब कुछ नया-नया था, वातावरण लुभाया।
अब लग रहा पुराना, अपना हुआ पराया।
चलचित्र याद के क्या, अब खो रहे न आपा?
गहरी थकान आई, सब अंग कुलबुलाते।
बीमारियों ने घेरा, सिकुड़े सभी अहाते।
पग-शक्ति ने यहां से, बेरोक-टोक मापा।
लगने लगा समूचा, जीवन रहा खिलौना।
मजबूरियां सतातीं, चुभने लगा बिछौना।
मानी न हार हमने, संघर्ष खूब थापा।
अच्छी तरह जियेंगे, रुलायेंगे न आपा।

-डॉ जगदीश चंद्र शर्मा, संपादक, "बुलंद बनास", पो गिलूंड (राजस्थान)-३१३२०७

बुजुर्ग हमारे आदर्श हैं

*-स. सुरजीत सिंघ**

युगों-युगों से अच्छे माने गए सिद्धांतों की उपेक्षा करने में आज का भौतिकवादी युवा वर्ग लगा हुआ है और वह भौतिक सुख, ऐश्वर्य, धन, वैभव तथा विलासिता में निरंतर डूबता जा रहा है। इसी कारण समाज में चारों ओर अनेकानेक विकृतियां और समस्याएं उत्पन्न होती जा रही हैं। वर्तमान में सर्वत्र परिवर्तन नजर आ रहा है और आधुनिक बनने के चक्कर में अच्छे आदर्शों वाली पुरानी संस्कृति को ऐसे छोड़ा जा रहा है मानो वह अवांछनीय और अछूत हो गई हो।

आज समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली की अधिकतर समाप्ति एवं एकल परिवार की पनपती संस्कृति के कारण युवा वर्ग अपने आप स्वतंत्र एवं एकल जीवन जीने को लालायित है। वह परिवार में बड़े बुजुर्गों की दखलंदाजी को बोझ समझ कर बुजुर्गों के साथ अमानवीय व्यवहार करता है जिससे बुजुर्ग-जनों को तिरस्कारपूर्ण जीवन जीने पर मजबूर होना पड़ता है। आज के युवा वर्ग ने तो जमीन से जुड़कर चलना ही छोड़ दिया है। वह तो हर पल जमीन से ऊपर आकाश में ही उड़ना चाहता है और वह कभी नहीं सोचता कि आज वह जिस ऊंचाई पर पहुंचा है वहां उसको किसने पहुंचाया है। पालन-पोषण करने में इन वृद्ध-जनों ने न जाने कितनी परेशानियों का सामना किया है।

सेवा जैसा मूल मानवीय गुण युवा वर्ग में लुप्त होता जा रहा है। वृद्धों को घर से बेघर कर, वृद्धाश्रम में पहुंचा कर युवा वर्ग अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री मान लेता है, यद्यपि बुजुर्गों ने जो सपने संजोये थे उन सपनों को साकार कर कम से कम वृद्ध-जनों का थोड़ा-सा तो कर्ज चुकाया ही जा सकता है। आज की युवा पीढ़ी भौतिकता की अंधी दौड़ में निरंतर सब कुछ भूलती जा रही है। युवा वर्ग मानवीय मूल्यों को तिलांजलि देकर तनिक से स्वार्थ, लोभ व घृणा के वशीभूत होकर ऐसे घृणित कार्य कर बैठता है जो उसे इंसान से हैवान बना देते हैं। हमें बुजुर्गों के अमूल्य अनुभवों से बहुत कुछ सीखना चाहिए। आज आवश्यकता वृद्ध-जनों को सम्मान एवं इज्जत देने की है ताकि आने वाली पीढ़ियां भी वृद्धों का पूरा-पूरा सम्मान कर सकें और यह नितांत आवश्यक भी है।
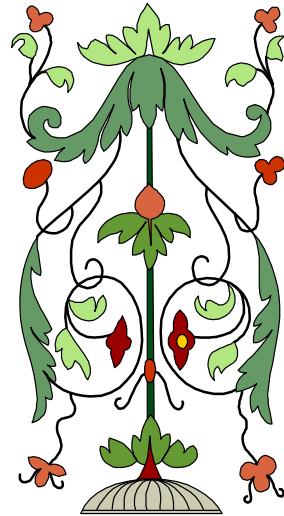
**५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)*

राष्ट्र-विकास में चरित्रहीनता बाधक है

-डॉ मनमोहन सिंघ*

संसार में चार महाशक्तियां हैं- पहली धन, दूसरी शारीरिक बल, तीसरी ज्ञान और चौथी चारित्रिक बल। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को धनवान, बलवान, ज्ञानवान और चरित्रवान होना चाहिए। मनुष्य से समाज और समाज से राष्ट्र बनता है। इन चारों महाशक्तियों को ग्रहण करने से ही मनुष्य का चहुंमुखी विकास होगा और तभी राष्ट्र सही अर्थों में विकास कर पायेगा अन्यथा नहीं। कहावत भी है :

"यदि मनुष्य का धन नष्ट हुआ तो समझो कुछ नष्ट नहीं हुआ, यदि मनुष्य का शरीर कमजोर हुआ तो समझो कुछ नष्ट हुआ और यदि मानव का चरित्र नष्ट हो गया तो समझो सब कुछ नष्ट हो गया।"

मनुष्य के पास यदि चारित्रिक महाशक्ति नहीं तो कुछ भी शेष नहीं रहेगा। कहते हैं कि जिसने बुरे चलन को छोड़कर अच्छे चरित्र को नहीं अपनाया उसके मन को चैन और आत्मा को शांति नहीं मिल सकती। आज देख लो, रूस और अमेरिका के वैज्ञानिक कैसे-कैसे चमत्कार अपने बुद्धि-बल पर दिखाते हैं, परन्तु क्या उनके मन में चैन है? कदापि नहीं। क्या कारण है? कारण स्पष्ट है कि आज विकसित और विकासशील कहलाने वाले सभी राष्ट्र धन, शरीर और ज्ञान से केवल तीन महाशक्तियों को ही अर्जित करने में लगे हैं। उन्हें ज्ञात भी है कि उनके चहुंमुखी विकास का जो हरेक कोना खाली पड़ा है वो है चरित्र का। मानव का चरित्र कैसे बनेगा, इसको वे जानते नहीं। तभी तो इस ओर किये गये कोई भी प्रयास या कार्यक्रम सही अर्थों में सफल नहीं हो पा रहे हैं।

चरित्र के संबंध में कोई भ्रांति न रहे इसलिए आओ, अधिक खोलकर समझ लें। चरित्र का अर्थ प्राय: स्त्री और पुरुष के स्वच्छ सम्बंध समझा जाता है, परन्तु चरित्र केवल यहीं तक सीमित नहीं, इसका दायरा बहुत विस्तृत है। यदि हमारे शरीर में बल है और एक गुंडा किसी अबला को या किसी मासूम बच्चे को तंग कर रहा है और हम यह देख कर भी मौन रहते हैं तो विश्वास कीजिए यह अच्छा चरित्र नहीं। यदि हमारे पास धन है और हम यह देख रहे हैं कि कोई दूसरा व्यक्ति धन के न होने से कष्ट में फंस रहा है तो सच जानिये, हम चरित्र से गिरते जा रहे हैं। यदि हमारे पास ज्ञान है और हम यह देखकर भी मौन रहते हैं कि दूसरा व्यक्ति कुमार्ग पर जा रहा है और उसे बचाने का प्रयत्न नहीं करते तो हम चरित्र से गिर जाते हैं। यदि हम किसी को वचन देकर उसका पालन नहीं करते तो हम चरित्र से गिरते हैं। देश में रहते हैं, उसका अन्न खाते हैं और उसके बावजूद भी शत्रुओं का साथ देते हैं, कभी किसी देश का और कभी किसी देश का पक्ष लेते हैं तो हम चरित्र से गिरते हैं। वस्तुत: चरित्र का अर्थ बहुत विशाल है।

हमारे देश में सारे संसार को हर प्रकार की तथा चरित्र की भी शिक्षा देने की क्षमता

*८८९, फेज १०, मोहाली-१६००६२

थी। परन्तु अब हमारा भारत राष्ट्र बहुत हद तक चरित्रहीनता में फंस गया है। हमारे देश का हल अब अत्यंत खसता है।

विश्व के इतिहास का अध्ययन करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि भारतवासी प्राय: बड़े बलवान, ज्ञानवान होते थे। इस देश को सबसे धनाढ्य देश माना जाता था किन्तु आज यह देश चरित्रहीनता की बुराई होने के कारण अत्यंत निर्धन हो गया है। चरित्रहीनता के अनेक कारण हैं जिनमें से कुछ की निशानदेही करने का प्रयास किया जा रहा है:

१. विद्यालयों की पुस्तकों में नैतिक शिक्षा का अभाव
२. अपराधियों को अपराध के अनुरूप दंड न देना
३. जनता द्वारा स्वांग, सिनेमा और टेलीविजन पर भद्दे और फूहड़पन के नाच-गाने देखना-सुनना
४. गलत दिशा में ले जाने वाली पुस्तकों का जनता में प्रचार
५. अश्लील पुस्तकों का जनता में प्रचार
६. तामसी भोजन का अत्यधिक सेवन
७. नशीले पदार्थों का आम ही मिल जाना और सेवन। तम्बाकू, शराब, सुलफा, गांजा, चरस, अफीम और स्मैक आदि सभी नशे जीवन को मृत्यु में बदलने वाले हैं।
८ बुरी संगत करना
९. पाखंडी और अंधविश्वासियों का देश में जाल फैलना
१०. विदेशी संस्कृतियों द्वारा भारतीय संस्कृति पर किये जा रहे भीक्ष्ण आक्रमण
११. माता-पिता द्वारा अपनी संतानों को सचरित्रता की शिक्षा न दे पाना।

यह दावा नहीं कि चरित्रहीनता के मात्र यही कारण हैं, इसके और भी अनेकों कारण हो सकते हैं। जब तक हम चरित्रहीनता के कारणों को न समाप्त करके केवल भौतिक पदार्थों के संग्रह में ही लगे रहेंगे तब तक सुख एवं चैन से नहीं रह सकेंगे। बिना चरित्र-निर्माण के राष्ट्र का इच्छित निर्माण कभी नहीं हो सकता। इस कार्य में आओ! हम क्रियाशील हों।

कविता

पावन पर्व वैसाखी

पावन पर्व वैसाखी देखने,
हमने है अनंदपुर जाना!
अनंदपुर में हुए चोज को,
हमने है अपना शीश झुकाना।
तैयार-बर-तैयार सिंघ सजने का,
जहां हुआ विस्मय कारनामा।
साहिब दशम गुरदेव जीओ,
कामिल पुरख महा महाना।
अमृतधारी सिंघ सजाये,
बख्शा उन्हें विलक्षण बाणा।
सब कुछ अर्पित देश-कौम को,
तभी दशम पिता के पूत कहलाना।
'सिरु धरि तली गली मेरी' आना,
जगत-गुरु जी का फरमाना।
आत्म-रंग रूहानी अनुभव,
हमने भी है वहां से पाना।
पावन पर्व वैसाखी देखने,
हमने है अनंदपुर जाना!

-डॉ सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, जिला गुरदासपुर। मो ९४१७१-७५८४६

गुरबाणी चिंतनधारा-४२

'सोहिला' बाणी की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

'सोहिला' बाणी 'कीर्तन सोहिला' नाम से भी प्रचलित है, जिसका अर्थ है अकाल पुरख की स्तुति (तारीफ का गीत)। नित्त-नेम की बाणियों में रात्रि को सोने से पूर्व तथा गुरुद्वारा साहिब में संध्या-समय 'सो दरु' रहरासि साहिब की बाणी के पाठ, आरती तथा शबद-कीर्तन के उपरांत दीवान की समाप्ति पर सुखासन के समय यह बाणी पढ़ने की मर्यादा है।

महान विद्वान भाई गुरदास जी ने इस पावन बाणी का नाम 'कीर्तन सोहिला' ही लिखा है, यथा:
राती कीरति सोहिला करि आरती परसादु वंडंदे। *(वार ६:३)*

बुजुर्गों के चिंतानुसार यह बाणी एक ताले की तरह है। जैसे दरवाजे पर ताला लगा होने पर उसके अंदर कोई प्रवेश नहीं कर सकता ठीक उसी तरह जो जीव रात को सोने से पूर्व इस बाणी का श्रद्धा एवं एकाग्रता से पाठ करके सोते हैं उनके मन रूपी द्वार के अंदर भी किसी तरह का भय, बुरे विचार तथा डरावने ख्वाब (सपने) आदि प्रवेश नहीं कर सकते। अत: ऐसे व्यक्ति अल्प-सी नींद में ही सम्पूर्ण विश्राम का आनंद लेकर स्वस्थ तन-मन से अमृत वेला (प्रभात समय) की संभाल करते हैं और अमृत वेला में प्रभु-सिमरन में जुड़ कर आत्मिक लाभ प्राप्त करते हैं।

इसके अतिरिक्त सिक्ख-जगत में प्राणी की मृत्यु पर मृतक संस्कार से पूर्व भी जपु जी साहिब का पाठ करके 'कीर्तन सोहिला' बाणी पढ़ने की मर्यादा है। 'सोहिला' बाणी पांच शबदों का संग्रह है। 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' विषय-सूची में इस बाणी का नाम 'सोहिला' ही अंकित है। पहले तीन शबद गुरु नानक पातशाह के उच्चारण किये हुए हैं। चौथा शबद श्री गुरु रामदास जी तथा पांचवां और अंतिम शबद पंचम पातशाह द्वारा उच्चारण किया गया है।

संक्षिप्त आकार में विरचित इस सारगर्भित बाणी का मनोरथ ईश्वर तथा मौत को सदैव याद रखने को प्रेरित करता है। सारा दिन का थका-हारा व्यक्ति रात्रि को सोने से पूर्व एकाग्रचित्त होकर कुछ पलों में ही इस बाणी का पाठ कर आत्मिक लाभ प्राप्त कर सकता है।

'सोहिला' बाणी में जीवन के गूढ़ तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है तथा संसार की नश्वरता की ओर संकेत किया गया है। साथ ही बेशकीमती श्वासों का सदुपयोग करने की प्रेरणा भी दी गई है, क्योंकि श्वासों की पूंजी निश्चित है, इसे तनिक भी बढ़ाया या घटाया नहीं जा सकता। अत: जिन्हें मौत याद रहती है वे ईश्वर को नहीं भुलाते और जो ईश्वर का स्मरण करते हैं उन्हें आत्मिक अडोलता की अवस्था प्राप्त हो जाती है।

सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥
(पन्ना १२)

'सोहिला' बाणी का शीर्षक, जिसका अर्थ है मंगलकारी गीत, राग गउड़ी दीपकी में उच्चारण किया गया पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर। मो: ०९३१४६-०९२९३*

जी का पावन शबद है।

'ੴ' अर्थात् परमेश्वर एक है। **'सतिगुर प्रसादि'** अर्थात् जिसे सच्चे गुरु की कृपा से जपा जा सकता है। गुरु पातशाह का पावन फरमान है कि जिस हृदय (सतसंग) रूपी घर में उस अकाल पुरख की स्तुति होती है, जहां उस मंगलकारी प्रभु की सिफ्त-सलाह के गीत गाए जाते हैं और जहां सृष्टि के सृजनकर्ता अकाल पुरख वाहिगुरु के गुणों की विचार होती है उस घर (सतसंगत) में मिलकर प्रभु की कीर्ति का मंगलमयी गीत गायन करते रहो तथा इस प्रकार अपने सृजनहार का सिमरन करते रहो।

तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥
हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥रहाउ॥

हे मेरी आत्मा रूपी वधू! तू सतसंगियों के साथ मिलकर भय से रहित निर्भय स्वरूप प्रभु-पति के गुणों का कथन कर अर्थात् ईश्वर की सिफ्त-सलाह का मंगलमयी गीत गायन कर। मैं बलिहार (कुर्बान) जाती हूं उस सिफ्त-सलाह के गीत से जिसकी कृपा से सदा कायम रहने वाला सुख मिले। अत: सुखों के निधान उस परमेश्वर को कभी मत भुलाओ, हमेशा प्रभु का यशगान करते रहो।

नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥
तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥

सृजनहार प्रभु नित्य सृष्टि के समस्त जीवों की सार-संभाल करता है अर्थात् हे जीव! जिस अकाल पुरख की उपस्थिति में हर पल जीवों की संभाल हो रही है; सभी दातें बख्शने वाला दातार जो प्रभु सबकी सार-संभाल करता है, जिस दातार प्रभु की दातों की कीमत नहीं आंकी जा सकती उस परमेश्वर का तू क्या अंदाजा लगा सकता है? वह प्रभु तो अनंत, बेअंत है। उस दातार पिता की रहमतों का कोई भेद नहीं जान सकता।

संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥
देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥

उपरोक्त पावन पंक्तियों में गुरु पातशाह ने प्रत्येक जीव के श्वासों की पूंजी के संदर्भ में समझाते हुए सतर्क किया है कि प्रत्येक जीव-स्त्री का यह मायका घर है और जब समय आयेगा तुझे अपने प्रियतम पति के देश जाना ही होगा। अत: मन को प्रबोधित करते हुए, कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन करते हुए गुरु जी फरमान करते हैं कि प्रत्येक जीव का संवत् (वर्ष) निश्चित है। वस्तुत: इस बीच का समय उस मालिक की दरगाह से ही लिखा हुआ है। अत: हे सतसंगी सहेलियो! तुम सब मिलकर मुझे सगुण का तेल चढ़ाओ, शुभ आशीषें भी दो अर्थात् मेरे लिए अरदास बेनती करो जिसके फलस्वरूप मेरा प्रभु-पति से मिलाप हो जाए।

वस्तुत: इस शबद में श्री गुरु नानक देव जी ने लड़की के विवाह का दुनियावी उदाहरण देकर सहज शब्दावली में जीवात्मा रूपी पत्नी तथा परमात्मा रूपी पति के विवाह के समय की सभी आशीषें उसे देते हुए प्रभु-नाम के साथ जोड़ने के लिए प्रेरित किया है। जैसे सामाजिक रस्में अदा करते हुए उसके सिर में तेल डाला जाता है और यही आशीष दी जाती है कि तू अपने ससुराल में सुखी रहे। अगर जीव-स्त्री ससुराल में अपने पति के घर में सुखी रहना चाहती है तो उसे अपने मायके में आचार-विचार श्रेष्ठ बनाने होंगे, साथ ही सतसंगी-जनों की आशीषें भी लेनी होंगी तभी वह पति के घर में सुखी रह सकती है। प्रत्येक जीव-स्त्री, चाहे वह स्त्री-रूप में हो या पुरुष-रूप में, उसे प्रियतम प्रभु के घर एक न एक दिन जाना ही पड़ता है, जैसा कि गुरबाणी का सुंदर प्रमाण है:

सभना साहुरै वंञणा सभि मुकलावणहार ॥
नानक धंनु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥
(पन्ना ५०-५१)
घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥

गुरु पातशाह प्रत्येक जीव को अटल सच्चाई "मौत" के प्रति जागरूक करते हुए फरमान करते हैं कि परलोक में जाने के संदेशे (मौत के मुहूर्त) की यह चिट्ठी प्रत्येक घर में आ रही है। यह खत (निमंत्रण-पत्र) सदैव आते ही रहते हैं। हे सतसंगी-जनो! इस तरह मौत का निमंत्रण भेजने वाले पति-परमेश्वर को हमेशा याद रखो। हे नानक! हमारे भी ये दिन अर्थात् मृत्यु के पल नजदीक आ रहे हैं। वस्तुत: श्वासों की पूंजी निश्चित है। उसे बढ़ाया या घटाया नहीं जा सकता, केवल उनका सदुपयोग करते हुए अपने जीवन रूपी मनोरथ को प्राप्त किया जा सकता है। मनमुख अपनी जीवन रूपी बाजी हार जाते हैं तथा गुरमुख अपना जीवन संवार कर मालिक की दरगाह में सम्मानपूर्वक जाते हैं। गुरबाणी का पावन फरमान है :

जितने नरक से मनमुखि भोगै गुरमुखि लेपु न मासा रे ॥ (पन्ना १०७३)

नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी का पावन फरमान है कि जिन पर पूर्ण गुरु की कृपा-दृष्टि हो गई उन्होंने ही जीवन-युक्ति को असल में समझा है, यथा :

गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥ (पन्ना ६३३)

यही नहीं, गुरमुख-जन तो निर्मल तन-मन से सदैव उसी ईश्वर में ही एकरूप रहते हैं, यथा :

गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै हउमै सबदि जलाए ॥
तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै समाए ॥ (पन्ना ९४६)

अत: गुरबाणी आशयानुसार जीव अपना जीवन बना कर, निराकार प्रभु के देश जाकर उसी में विलीन हो जाये। गुरबाणी का पावन संदेश है :

निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु ॥
(पन्ना ५९५)

रागु आसा महला १ ॥
छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥
गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥१॥

राग आसा में उच्चारण किया गया पहले पातशाह धंन धंन श्री गुरु नानक देव जी का पावन शबद। गुरदेव का पावन फरमान है, भाई! छ: शास्त्र (धर्म-पुस्तकें) हैं, छ: ही उन शास्त्रों को रचने वाले हैं, छ: ही उनके पावन उपदेश (सिद्धांत) हैं, लेकिन उन सबका मूल स्रोत 'गुरु' (परमेश्वर) एक ही है। अत: ये समस्त सिद्धांत उस एक ईश्वर के ही अनेक स्वरूप हैं। इन समस्त धर्म-ग्रंथों के ज्ञान-प्रकाश का केन्द्र एक परमेश्वर ही है। वस्तुत: यह दृश्यमान जगत उस अदृश्यमान निर्गुण प्रभु का सगुण प्रसार है, जैसा कि बाणी में स्पष्ट किया गया है :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ (पन्ना १३)

सब जीवों में उसी की ज्योत जगमगा रही है तथा इसी ज्योति (ज्ञान) के कारण सब में सूझबूझ है।

बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥
सो घरु राखु वडाई तोइ ॥१॥रहाउ॥

हे भाई! जिस सतसंग रूपी हृदय घर में ईश्वर की स्तुति होती है, उसे संभाल कर रख उस सतसंग के सहारे को (जीवन का आधार) बना। इसी में तेरी भलाई छिपी है।

वस्तुत: जिस भी धर्म के अनुयायी केवल एक ही अकाल पुरख का आसरा लेकर उसी की सिफत-सलाह करते हैं उन्हें ही बख्शिशें प्राप्त होती हैं, क्योंकि यही जीव की सर्वोत्तम उपलब्धि है कि उसे बंदगी (नाम-दान) की प्राप्ति हो जाए, जैसा कि सुखमनी साहिब में पंचम पातशाह का पावन फरमान है :

सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥
गुर का सिखु वडभागी हे ॥
सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥
नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥
(पन्ना २८६)

विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा
थिती वारी माहु होआ ॥
सुरजु एको रुति अनेक ॥
नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥

उपरोक्त पंक्तियों में गुरु पातशाह ने वैज्ञानिक तथ्य प्रस्तुत किया है कि किस प्रकार सूर्य एक है, लेकिन विसुए, चसिआ, घड़ीआ, पहरा, थिती, वारी, माहु आदि तथा अनेक ऋतुएं हैं जिसमें सबका अलग रूप दृष्टिगत होता है। हे भाई! ईश्वर एक है तथा उसकी प्राप्ति के साधन (मार्ग) अनेक हैं।

बाबा काहन सिंघ जी ने इस समय-सारिणी को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि जैसे वर्तमान में समय का हिसाब-किताब रखने हेतु सेकंड, मिनट तथा घंटों की गिनती की जाती है वैसे ही पिछले समय में विसुए, चसिआ के हिसाब से समय का वर्गीकरण किया जाता था। जैसे एक बार आंख खोलने तथा बंद करने के समय को निमख कहते हैं वैसे ही १५ बार आंख झपकने के समय को विसवा तथा १५ विसवों का एक चसा, ३० चसों का १ पल, ६० पलों की १ घड़ी, साढ़े सात घड़ियां = १ पहर, ८ पहर = १ दिन-रात, १५ थितियां, ७ वार, १२ महीने तथा ६ ऋतुएं मानी जाती हैं। इसीलिए जीव को प्रत्येक पल सार्थक करने का पावन उपदेश गुरबाणी में दिया गया है, यथा:

उरि धारै जो अंतरि नामु ॥
सरब मै पेखै भगवानु ॥
निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥
नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥
(पन्ना २७४)

उस मालिक की दरगाह में जीव से घड़ी-घड़ी का लेखा मांगा जायेगा। गुरबाणी का प्रमाण है :

घरी घरी का लेखा मागै काइथु चेतू नाउ ॥
(पन्ना ११०४)

आओ! इस तथ्य पर विचार करें कि समय बड़ा ही कीमती है। चिंतकों के चिंतनानुसार आप कल्पना करें कि एक ऐसा बैंक है जो प्रतिदिन आपके खाते में ८६,४००/- रुपये जमा कर देता है और आपके सामने एक शर्त रखता है कि आपको इसे अगला दिन आरंभ होने से पूर्व पूरा खर्च करना है। अगर आप पूरा खर्च न कर सकेंगे तो बचे पैसे बैंक वापस ले लेगा और अगले दिन प्रात: उतनी ही राशि आपके खाते में पुन: जमा कर दी जायेगी। किन्तु पिछले दिन की बची राशि अगले दिन के खाते में नहीं होगी। आप क्या करेंगे? अक्सर उसी दिन आप सारा पैसा खर्च कर देंगे। किन्तु क्या आप पूरे पैसे का सदुपयोग कर पायेंगे या अगले दिन वह तुम्हारा नहीं रहेगा इसलिए व्यर्थ में उड़ा देगें?

विचार करें, ऐसा ही बैंक हम सबके पास है, जिसका नाम है "समय"। प्रतिदिन सुबह होते ही हमारे खाते में ८६,४०० सेकंड जमा कर दिये जाते हैं और २४ घंटों के पश्चात हम देखते हैं कि सारे दिन में जो समय अच्छे कार्यों में व्यतीत नहीं हुआ वह बेकार चला गया, क्योंकि सारे समय का सदुपयोग नहीं हुआ।

उपरोक्त उदाहरण से हम शिक्षा लें कि समय का अधिक से अधिक सदुपयोग हो, सदुपयोग अपनी सेहत के लिए, सफलता के लिए, इससे भी अधिक दूसरों की भलाई के लिए, धर्म हित, राष्ट्र हित नेक कर्मों में समय लगाओ, क्योंकि बीता हुआ समय फिर लौट कर नहीं आता। ईश्वर द्वारा दी गई श्वासों की पूंजी निश्चित है उसे बढ़ाने या घटाने की समर्थता किसी में भी नहीं है, केवल और केवल उसका सदुपयोग करने में ही हम सबका कल्याण है। सेवा, सिमरन वाला जीवन, स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ जीना, परोपकारी जीवन बनाना है, जैसा कि गुरबाणी का पावन फरमान है :

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ (पन्ना २६)

निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा ही प्रवाण है, यथा :

सेवा करत होइ निहकामी ॥
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ (पन्ना २८६)

प्रति पल समय हाथ से निकलता जा रहा है, अतः इसे आत्मिक आनंद की प्राप्ति हेतु प्रभु-सिमरन में लगायें। वर्तमान को पूरा-पूरा जियें, पूरी ईमानदारी तथा आत्मविश्वास से आत्मिक आनंद तभी संभव है जब **'मैं'**, **'मेरी'**, की तंग सोच से ऊपर उठकर सरबत्त के भले की कामना से जीयें, क्योंकि:

अपने लिए तो सभी जीते हैं,
पशु, पक्षी और कीट-पतंग।
लेकिन आदमी के जीने का,
होता है कुछ अलग ही ढंग।

वर्षों, महीनों, दिनों, मिनटों, सेकंडों का क्या मोल है? आओ विचार करें :

-- एक वर्ष का मूल्य उस विद्यार्थी से पूछें जो कक्षा में फेल हो गया है।

-- एक माह का मूल्य उस मां से पूछो जिसने आठ माह के बालक को जन्म दिया हो।

-- एक दिन का मूल्य उस मजदूर से पूछो जिसे काम ही न मिला हो और मजदूरी न मिलने की वजह से जिसके घर का चूल्हा ही न जला हो।

-- एक घंटे का मूल्य उससे पूछो जो किसी का इंतजार कर रहा हो।

-- एक मिनट का मूल्य उससे पूछो जिसकी एक मिनट की देरी की वजह से ट्रेन छूट गई हो।

-- एक सेकंड का मूल्य उस व्यक्ति से पूछो जो भयंकर दुर्घटना में अभी-अभी या बाल-बाल या एक सेंकड आगे-पीछे होने से बचा हो।

इसलिए प्रत्येक पल को जियें सोच-विचार कर, क्योंकि एक पल के किये गये कर्मों का लेखा-जोखा किसी एक बड़े बैंक में लिखा जा रहा है। अतः आओ, याद रखें कि समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। कल जो बीत गया इतिहास था, आने वाला कल अनिश्चित है, आना भी है या नहीं कोई नहीं जानता। आज का दिन (पल) उपहार स्वरूप है, तभी तो इसे वर्तमान कहते हैं। इसका सदुपयोग करें, न जाने कौन-सा पल हमारी जिंदगी का आखिरी पल हो, जैसा कि सोहिला साहिब की बाणी में गुरु नानक पातशाह हमें पावन दिशा दे रहे हैं:

घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥

क्योंकि उस ईश्वर की ओर से नित्य बुलावे आ रहे हैं और प्रत्येक जीव को सजग रहना है, न जाने किस पल हमारे लिए भी बुलावा आ जाए! अतः प्रत्येक पल को सार्थक करें। वाहिगुरु के चरणों में नित्य अरदास करें, हे वाहिगुरु! रहमत करो, हमारा यह मानव जीवन सार्थक हो सके।

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-३१

आध्यात्मिक संतुष्टि के खोजी : कवि भाई सुखदेव

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

राजाश्रय प्राप्त करना, दरबारी कवि बनना या किसी राजा से वृत्ति प्राप्त करना मध्यकालीन कवियों के लिए सबसे बड़ी सफलता माना जाता था। यश, मान, धन सभी की पूर्ति इस माध्यम से हो जाती थी। परंतु कुछ विद्वान् एवं जागरूक कवि इससे भी आगे बढ़ आत्मिक तृप्ति की तलाश में रहते थे। सांसारिक उपलब्धियां उन्हें सर्वथा संतुष्ट नहीं कर पाती थीं, अतः वे आध्यात्मिक परिवेश में विचरण करना चाहते थे। गुरु दशमेश पिता का दरबार ऐसे आंतरिक खोजियों के लिए एक मंजिल था। जहां बाकी राज दरबारों में धन-प्रतिष्ठा की तृष्णा, लालसा एवं चाहना छाई रहती थी वहां दशमेश पिता के दरबार में शबद-साधना के द्वारा आध्यात्मिक संतुष्टि प्राप्त करने का प्रयास किया जाता था।

भाई सुखदेव की कहानी इस रुझान एवं प्रवृत्ति की अनुपम मिसाल है। आप ने अनेक राज-दरबारों में रहकर अत्यंत मान एवं धन अर्जित किया परंतु आत्मिक तृप्ति न पा सके। अंततः आप दशमेश पिता के दरबार में आये और अपनी काव्य-कला को अध्यात्म के चरणों में समर्पित कर 'अध्यात्म-प्रकाश' की रचना की।

विद्वान कवि भाई सुखदेव कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे, जिनका जन्म-पालन पूर्वी उत्तर प्रदेश के 'कपिला नगर' नामक स्थान पर हुआ। बड़े होने पर आप जिला रायबरेली के गांव दौलतपुर में आ बसे। यहीं से आप विद्या-अध्ययन करने के लिए बनारस गये और प्रकांड पंडित बन कर लौटे।

सबसे पहले भाई सुखदेव जिला फतहपुर के कसबा असोथिर के राजा भगवंत राय खीची के आश्रय में रहे। फिर आप कुछ समय तक डोंडिया खैरा नगर के राजा राव मर्दन सिंह के दरबार में रहे। इसके बाद अमेठी के राजा हिम्मत सिंह के पास चले गये। मुरारी मऊ के राजा देवी सिंह ने भी आपको अपना दरबारी कवि बनाया। राजा देवी सिंह ने ही आपको अपने गांव दौलतपुर का जागीरदार बना दिया। आपके दो बेटे जगन्नाथ और बुलाकी राम जागीर की देख-रेख करते। आपके वंशज आज भी दौलतपुर में ही निवास करते हैं।

अपनी प्रतिभा और विद्वता के बल पर आखिरकार कवि भाई सुखदेव औरंगजेब के वजीर नवाब फाजिल अली खां के शाही कवि बने।

इन राजाओं-नवाबों के आश्रय में रहते हुए कवि सुखदेव ने अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में अनेक काव्यों की रचना की। अमेठी के राजा हिम्मत सिंह के लिए 'छंद विचार' लिखा तो राव मर्दन सिंह के लिए 'रसार्णव' रचा। राजा देवी सिंह के कहने पर 'शृंगार लता' लिखा तो नवाब फाजिल अली को प्रसन्न करने के लिए 'फाजिल अली प्रकाश' की रचना की।

प्रकाण्ड विद्वान् कवि सुखदेव को यश-

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना) पंजाब। मो: ०९४१७२-७६२७१*

मान-प्रतिष्ठा-धन सब मिला, परन्तु आत्मिक संतुष्टि न मिली। अपनी आत्मा को तृप्त करने के लिए अंततः कवि सुखदेव अंत में दशमेश पिता के रूहानी वातावरण वाले दरबार में आये और वहीं के हो गये।

दशमेश पिता के दरबार में रहते हुए कवि भाई सुखदेव ने संवत् १७५५ वि. अर्थात् सन् १६९८ ई में 'अध्यात्म प्रकाश' की रचना की। आप स्पष्ट करते हैं कि उनका ग्रंथ प्रसिद्धि प्राप्त प्राचीन ग्रंथों का सार है :

वेद बचन सिंम्रिति बचन, कहि सुखदेव बिलास,
अधयातम प्रकाश ते अधयातम प्रकाश।
संबत सत्रह सै बरख, पचपन अस्वन मान,
एकादशि बुध ग्रंथ भव, शुकल पखय सुभ जान।

'अध्यात्म प्रकाश' में भाई सुखदेव ने ज्ञान की व्याख्या/परिभाषा की है। जिस ज्ञान की प्राप्ति-मात्र से दुखों का नाश हो जाता है, वह ज्ञान है--'आत्म साक्षात्कार'। इस ज्ञान को गुरु प्रदान करता है। वही शिष्य को बताता है कि तू 'ब्रह्म' रूप है :

सत चित जानत ब्रहिम कउ, तउ लउ कहियत गिआन।
ब्रहिम आप ही कउ लखहु, सो विगिआन विधान।

आप ने 'अध्यात्म प्रकाश' में अकाल पुरख का कितना सुंदर चित्रण किया है, देखें :

रवि को प्रकाश पाइ लोचन बिलोकहि रूप,
तैसे रवि ब्रहिम को प्रकाश सब दात मैं।
जैसे एक सूत माझि मणि गण पोईयत,
तैसे एक चेतन है बुधिन के गात मैं।
सब ही मैं एक वहै सभन ते नयारो रहै,
गगन समान न मिलत काहूं बात मैं।
आज, अबिनाशी, परिपूरण प्रकाशी,
'सुखदेव' सुखवासी ऐसो नित गन आत मैं।

इस प्रकार भाई सुखदेव को कितनी ही सांसारिक उपलब्धियां क्यों न हासिल हुई हों परंतु सच्ची आध्यात्मिक एवं आत्मिक शांति दशमेश पिता के आश्रय में आकर ही प्राप्त हुई।

कविता

बेटियां

धन्य है वह गांव, जहां ऐसी हैं बेटियां!
पढ़ाई-लिखाई में, जहां तेज हैं बेटियां!
धन्य है वह गांव, जहां माताएं भी हैं जागरूक,
दे रही हैं बेटियों को, बेटों की तरह तरजीह,
तब क्यों न पढ़ें, आगे बढ़ें गांव की ये बेटियां?
जी-जान लगाकर, भाई-बंधु और सब कोई,
आगे बढ़ें परिवार की गहना हैं बेटियां!
नाम रौशन करें, देश और समाज का,
राष्ट्र में सम्मान की हकदार हैं बेटियां!
धन्य है वह गांव, जहां विचार है ऐसा,
करते हैं हम नमन, उस गांव को सादर
जहां शिक्षा के लिये, प्रोत्साहित हैं बेटियां!
रोमांचित हैं हम, पढ़कर इस गांव के विवरण,
माताएं जहां बेटियों के, हित-त्याग की मूर्तियां!
सुहाग की निशानी को भी रखकर गिरवी,
पढ़ा रही हैं स्कूल में, कॉलेज में बेटियां!
गहनों के लिये तो होता, गहन प्रेम नारी का,
मगर उसे भी दुकानदार के पास रखकर गिरवी,
कह रहीं स्त्रियां, बेटियां भी तो हैं निशानी सुहाग की,
सुहाग की, सुहाग की निशानी हैं बेटियां!

-प्रो डॉ दीनानाथ शरण, दरियापुर गोला, बांकीपुर, पटना-८०००४ (बिहार)

घर आंगन का श्रृंगार होती हैं बेटियां

घर आंगन का श्रृंगार होती हैं बेटियां।
स्नेह, आत्मीयता का प्रतिरूप होती हैं बेटियां।
मां, बहन, पत्नी
सभी धर्मों को सहज भाव से
बखूबी निभाती हैं बेटियां।
विदाई के समय रोती भी हैं
उन लम्हों में सबको जी भर के,
रूलाती भी है बेटियां।
जीवन के हर क्षेत्र को
प्रदीप्त कर रही हैं बेटियां।
समय की मांग पर
रणचण्डी भी बन जाती है बेटियां।
फिर भी अनेक स्तरों पर
आज भी पुरुष प्रधान समाज द्वारा
भेदभाव की शिकार हैं बेटियां।
अनेक कानूनों के बावजूद
अत्याचार सहने को
आज भी अभिशप्त हैं बेटियां।
आज जो जन्म से पूर्व ही
गर्भ में ही मरने को अभिशप्त हैं बेटियां।
दुनिया में आगमन पर
सदियों बाद भी
खुशियां मनाये जाने की
अनवरत प्रतीक्षा में
रत हैं आज भी बेटियां।

-डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही', एस. ए जैन कॉलेज, अंबाला शहर, हरियाणा।

लेखक साहिबान के लिए कुछ जरूरी बातें

- 'गुरमति ज्ञान' में सिक्ख इतिहास एवं गुरबाणी चिंतन पर आधारित तथा गुरमति की कसौटी पर खरी उतरती रचनाएं ही प्रकाशित की जाती हैं। लेखक साहिबान गैर-सिक्ख समुदायों के इतिहास तथा धार्मिक ग्रंथों जैसे वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं राम चरित मानस आदि के बारे में जानकारी देती रचनायें लिखकर न भेजें।
- गुरबाणी की पंक्तियां पूर्णत: मूल स्रोत के साथ मिलान की गई हों और उनका पन्ना नंबर भी अवश्य दें।
- यदि सिक्ख-स्रोत ग्रंथों/पुस्तकों से भी पंक्तियां शामिल की जा रही हों, वो भी मूल ग्रंथों/पुस्तकों के साथ मिलान की हुई हों तथा उनकी पृष्ठ संख्या अवश्य दें। ग्रंथ/पुस्तक के प्रकाशक और प्रकाशन वर्ष का भी उल्लेख करें।
- भक्त साहिबान की बाणी की पंक्तियां केवल श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उनकी दर्ज बाणी वाली ही होनी चाहिए।
- कृप्या सांप्रदायिक भावना से प्रेरित आलेख लिखकर न भेजें। लिखे व भेजे जाने वाले आलेख किसी समुदाय विशेष के हृदय या मानसिकता को पीड़ित न करते हों।
- निपट अकादमिक और हवाला-सामग्री से ही भरे आलेख नहीं भेजें; गुरमति दृष्टि, धार्मिक तथा आध्यात्मिक और सदाचारक संदेश भी रचनाओं में अवश्य शामिल हो। केवल राजनैतिक विषयों पर लिखे आलेख न भेजें।
- मामूली या सामान्य विषयों पर आधारित कविताएं न भेजें।
- पावन गुरबाणी का कविता में अनुवाद करके न भेजें।

बुजुर्गधन के प्रति विशेष सुझाव

बुजुर्ग अवस्था मानवी जीवन की अंतिम अवस्था है जो बचपन एवं यौवन के पश्चात् आती है। यह मनुष्य-मात्र का साथ अंतिम सांस तक निभाती है। मनुष्य अपने जीवन में न जाने कैसे कर्म करके धन उपार्जन में लगा रहता है और महल-मुनारे खड़े करता है! यह सब वह अपने परिवार के सुख के लिये करता है न कि स्वयं के लिये। बुढ़ापा आने पर मनुष्य दुर्बल, शक्तिहीन, अकुशल होकर पराश्रित हो जाता है जिसका भान उसे यौवनावस्था में नहीं था। इस अवस्था के लिये मेरे विशेष सुझाव निम्नानुसार हैं :

नवंबर २००९ का 'गुरमति ज्ञान' मासिक पत्र "बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक" के रूप में प्रकाशित हुआ जिसमें अधिकांश लेखकों ने अपने बहुमूल्य विचार, बुजुर्गों के प्रति सद्भाव, स्नेह, समर्पण एवं शिष्टाचार से ओत-प्रोत होकर प्रकट किये हैं। कुछ एक लेखकों ने अपने बुजुर्गों के जीवन के कुछ मार्गदर्शी विचार लिखकर या उनके जीवन की दैनिक गतिविधियां लिखकर अथवा किसी ने बुजुर्गों को अमूल्य निधि के रूप में प्रस्तुत किया है। मेरा भाव यहां यह बताने का है कि लेखकों ने किसी न किसी रूप मे बुजुर्गों के प्रति संवेदनशील होने का आग्रह किया है। नि:संदेह बुजुर्ग हमारे पूजयनीय हैं और ऐसा होना अथवा समझना भी चाहिए। भारत में तो बड़ों के प्रति पूरा परिवार ही समर्पित रहता आया है। समाज में भी बुजुर्गों का पूरा मान-सम्मान किये जाने की परंपरा आज तक निभाई जा रही है।

उन्नीसवीं सदी तक उक्त विचार शत-प्रतिशत उपरोक्त विचारों के अनुरूप थे, परन्तु विज्ञान के चमत्कारिक उपकरणों से मनुष्य के जीवन में ऐसा बदलाव आया कि वह इन नये उपकरणों का दास बन गया और अर्थव्यवस्था के चंगुल में इतना फंस गया कि उसे दिन-रात भी छोटे लगने लगे। धन के अंधे प्रभाव ने उसे अपनी बांहों में ऐसा जकड़ा कि वह हद से ज्यादा उलझता चला गया। उसे न अपनी न परिवार की और न ही बुजुर्गों की सेवा-संभाल का समय मिला और न ही स्वयं की देखभाल का। यहां तक कि मनुष्य के जीवन ने मशीन का रूप ले लिया और उसे समय का अभाव हर वक्त सताने लगा।

दूसरी ओर बुजुर्गों और बच्चों में एक पीढ़ी का अंतर, अलग रहन-सहन, हाव-भाव, वेशभूषा, शिष्टाचार एवं संवादों के बोल-चाल में अंतर स्पष्ट झलकने लगा। जहां बुजुर्गों की सेवा परिवार के बड़े होने के नाते कर्त्तव्य मान कर की जाती थी अब उसका परंपरा के रूप में निर्वाह किया जाने लगा अर्थात् मन से नहीं अपितु खानापूर्ति के रूप में ऐसा होने लगा। ऐसा ही कुछ बुजुर्गों की ओर से भी सामने आया, जैसे बच्चे की नाफरमानी पर चिड़चिड़ापन, बोलने की भाषा में भी परिवर्तन तथा बात-बात पर खफा होना आदि। स्पष्ट शब्दों में यह अंतर बुजुर्गों एवं बच्चों में १९वीं एवं २०वीं सदी की ही देन है।

मेरे द्वारा अंकित उपरोक्त विचारों की पुष्टि बुजुर्गों के विशेषांक में अंकित लेख तथा

'कुछ बुजुर्गों का हाल-ए-बयां', 'बुजुर्ग धन', 'बुजुर्गों की संभाल', 'बुजुर्गों की अहमियत' एवं 'बुजुर्ग खुद रोल माडल बनें' लेखों से स्वत: स्पष्ट हो जाती है। यहां मेरा सुझाव यह है कि समय के अनुरूप बुजुर्ग भी अपने आप को बदलें क्योंकि समय के परिवर्तन ने सबको बदल कर रख दिया है, जिसका वर्णन चंद शब्दों में किया जाना संभव नहीं है। बुजुर्गों को अपने परिवार से बदले हुये हालात के अनुरूप खुले दिल से बच्चों की नब्ज पहचान कर ही बातचीत करनी चाहिए। यदि बुढ़ापे का आनंद लेना है, यदि जीवन को सुखमय बिताना है और स्वयं एवं परिवार को खुशहाल देखना है तो "बुजुर्गधन" से मेरा आत्मिक आग्रह है कि स्वयं को समय के अनुरूप बदलें। बुढ़ापे को चिरायु बनावें, अपना अधिकाधिक समय सिमरन में बितावें, क्योंकि बुढ़ापा भी एक नियामत है। बुजुर्ग अवस्था को वर बनायें, अभिशाप नहीं, जैसा कि निम्न पंक्तियों से स्पष्ट होता है :

बुढ़ापा वह मंजिल है जिसमें आखिर सबको जाना है।
पर याद रखो कि बुजुर्गों के प्रति, हमें अपना फर्ज निभाना है।

-महेन्द्र सिंघ
५६, गणेशबाग, बून्दी (राजस्थान)

अपने प्रयास से सदस्य बनायें!

'गुरमति ज्ञान' पत्रिका मानव-मात्र की कल्याणकारी पत्रिका है, जिसमें गुरु साहिबान का मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है और हमें एक ओअंकार परमात्मा के मार्ग की ओर बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त होती है। जब से इस पत्रिका को पढ़ा, मन में यही इच्छा रहती है कि इससे अन्य व्यक्ति भी लाभान्वित होकर पुण्य-लाभ कमायें। सौ से अधिक व्यक्तियों के पास पत्रिका भिजवा चुका हूं। समस्त गणमान्य व्यक्तियों, परमात्मा में आस्था रखने वालों तथा गुरु-भक्तों से निवेदन है कि कम से कम सौ वार्षिक तथा दस सदस्य 'आजीवन' पत्रिका के अवश्यमेव नेक कमाई अथवा अपने प्रयास से बनायें।

-श्री हरिचन्द्र स्नेही, सोनीपत

भक्त रविदास जी पर इतनी कविताएं व लेख!

'गुरमति ज्ञान' का फरवरी २०१० अंक मिला। रंगीन चित्रों को देखकर प्रसन्नता हुई। भक्त रविदास जी पर एक साथ इतनी कविताएं और विविध लेख पढ़कर बहुत अच्छा लगा। आज के लाखों लोगों को भक्त रविदास जी से प्रेरणा लेनी चाहिए जो निज़ी स्वार्थों में डूबकर देश को खोखला कर रहे हैं। वाहिगुरु ऐसे जनों को सद्‌बुद्धि दें। दुनिया में सुख शांति रहे, वाहिगुरु सबका भला करें।

-माता प्रसाद शुक्ल. ग्वालियर।

"बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक" एक प्रेरणास्रोत

'गुरमति ज्ञान' मासिक का नवंबर २००९ का "बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक" अंक प्राप्त हुआ। यह विशेषांक बेहद ही अच्छा लगा। विद्वान लेखकों के लेख एवं कवियों की कविताएं अपने आप में एक नूतन अनुभव एवं प्रेरणा का स्रोत है जो सराहनीय हैं। मैं आप सब को आपके इस प्रयास के लिये हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिनके कारण यह विशेषांक सम्पन्न हुआ। मेरा आप से अनुरोध है कि आप भविष्य में भी इस प्रकार की सामग्री छाप कर पाठकों में जागरूकता एवं प्रेरणा की अलख जगाते रहें। मैं 'गुरमति ज्ञान' के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

-स. लखवीर सिंघ
झारसुगुड़ा (उड़ीसा)

ज्ञानवर्धक सामग्री से सुसज्जित पत्रिका

सर्वप्रथम नवंबर अंक के 'बुजुर्ग विशेषांक' की अपार सफलता पर बधाई स्वीकार करें। समस्त लेखकों का सहयोग सराहनीय है। जैसा कि मैंने पहले भी लिखा है कि 'गुरमति ज्ञान' वास्तव में ही ज्ञानवर्धक सामग्री से सुसज्जित पत्रिका है जिसे पढ़ने से आत्मतृप्ति का बोध होता है और ऐसे विशेषांक तो नि:संदेह इसकी गुणवत्ता में चार चांद लगा देते हैं। आशा है कि ऐसे प्रयास भविष्य में भी जारी रहेंगे। आपके कथनानुसार मैं भी अपनी कविताओं द्वारा 'गुरमति ज्ञान' के माध्यम से अपने भावों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सदैव प्रयासरत् हूं। उस परम पिता परमात्मा की महिमा अपरंपार है और यह मेरे लिए गुरु-कृपा से कम नहीं है।

-नविता शर्मा

२६, गुरजेपाल नगर, जालंधर।

पत्रिका ने अपनी जगह बना ली है।

आशा करती हूं कि वाहिगुरु की कृपा से आप परिवार सहित आनंद में होंगे। 'गुरमति ज्ञान' में आप मेरे लेखों को समय-समय पर स्थान देते हैं उसके लिए हृदय से आभारी हूं। वास्तव में पत्रिका ने दूर-दूर तक बसे पाठकों के मन में अपनी जगह बना ली है। मुझे जब किसी पाठक का फोन या पत्र लेख की प्रशंसा का मिलता है तो मुझे पत्रिका के इतनी दूर-दूर तक संदेश भेजने पर गर्व होता है। सच में यह पत्रिका पंजाब से बाहर अपना संदेश बाखूबी दे रही है। इसके लिए मैं संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई देती हूं।

-डॉ. आशा अनेजा, लुधियाना-१४१००८

ज्ञान सागर से परिपूर्ण पत्रिका

'गुरमति ज्ञान' पत्रिका नवंबर व दिसंबर २००९ तथा जनवरी व फरवरी २०१० प्राप्त हुईं। पत्रिका सिक्ख धर्म के ज्ञान सागर से परिपूर्ण है। पत्रिका से ज्ञान में वृद्धि होती है। मैं पत्रिका अति मनोयोग से पढ़ती हूं। 'बुजुर्ग श्रेणी विशेषंक' संगृहणीय है। समय-समय पर विशेषांक निकालते रहियेगा। सभी पत्रिका के लेख व कविताएं ज्ञान के साथ-साथ प्रेरणास्पद है। सभी लेखक व कवि बधाई के पात्र हैं।

-डॉ. अरुण रानी,

सहारनपुर (उ. प्र.)-२४७००१

कविता

विदेशियों के आगे हाथ मत फैलाओ

हमने मंत्रियों को भीख मांगते देखा है,
विदेशियों के आगे हाथ पसारते देखा है।
खुद त्याग करें सादगी से रहें,
तो क्यों भीख मांगने की नौबत आये?
भीख मांगना ठीक नहीं है विदेशियों से,
देश वैसे भी कर्ज के बोझ से लदा है।
धन लिया जा सकता है अपने ही देश के उन लोगों से
जो अमीर हैं, ठाट-बाठ, शानो-शौकत से रहते हैं।
कुत्तों को ए सी. में बिठाकर घुमाते हैं,
गरीब आदमी तड़प-तड़प कर भूखे मर जाते हैं।
उन अमीरों को क्यों नहीं खबर कि किसान मर रहे हैं?
जनता भूखी-प्यासी है, तुम त्याग, संयम अपनाओ।
कुछ दूसरों के लिये भी त्याग करो,
अपने ही भाई-बहिनों का दर्द समझो।

-श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल, द्वारा अग्रवाल न्यूज एजेंसी, हटा, दमोह (म. प्र.)-४७०७७५

काशी से जारी बयान को नजरअंदाज किया जाये : जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसर : ३ फरवरी। गत दिनों भक्त रविदास जी के जन्म दिवस पर काशी से जारी बयान सम्बंधी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ, जलंधर जिला के गांव रसूलपुर में गुरुद्वारा बाबा जौड़े में (भक्त) रविदास भाईचारे के अलग-अलग महापुरुषों की एकत्रता में शामिल हुए और इस बयान को नजरअंदाज करने के लिए अपील की। इस सम्बंध में जत्थेदार अवतार सिंघ ने जानकारी देते हुए बताया कि एकत्रता में शामिल भक्त रविदास भाईचारे से सम्बंधित 'श्री (गुरु) रविदास साधू संप्रदा सोसायटी' के अध्यक्ष श्री निर्मल दास ने स्पष्ट किया है कि वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विश्वास रखते हैं तथा उन्हें मालूम है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त रविदास जी की बाणी शामिल होने के कारण ही आज सारे संसार में भक्त रविदास जी का भारी सत्कार है। उन्होंने कहा कि समूह (भक्त) रविदास भाईचारे की श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पूर्ण आस्था है तथा वो पहले की तरह गुरुद्वारा साहिबान में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश करना जारी रखेंगे।

एकत्रता के दौरान जत्थेदार अवतार सिंघ ने (भक्त) रविदास भाईचारे को बताया कि ऊंच-नीच, जात-पात तथा वाह्याडंबरों के बंधन तोड़ कर मानवी भाईचारे वाले समाज की सृजना के लिए आवाज बुलंद करने वाले भक्त रविदास जी की बाणी को पंचम पातशाह साहिब श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज करके सम्मान प्रदान किया है, इसलिए ऐसे बयान को अहमियत न दी जाये।

सभी राज्यों तथा धर्मों के लिए एक-सा मापदंड हो

अमृतसर : १९ फरवरी। गत दिनों भारत के गृहमंत्री श्री पी. चिदंबरम द्वारा जम्मू-कश्मीर में दिये बयान कि जम्मू-कश्मीर में से सरहद पार गये नौजवानों को वापिस देश लौटने पर मुख्य धारा में शामिल किया जायेगा, का स्वागत करते हुए धर्म प्रचार कमेटी की एकत्रता में प्रस्ताव पारित किया गया कि यह नीति पंजाब में भी लागू की जाए ताकि पंजाब में लम्बा समय हालात खराब रहने तथा जून १९८४ के घल्लूघारे के दौरान सैंकड़ों नौजवान पुलिस तथा सुरक्षाबलों के जुल्म से डरते सरहद पार कर गए हैं, वे भी अपने देश वापिस लौट कर परिवारों को मिल सकें तथा अपना नया जीवन शुरू कर सकें। एकत्रता के बाद जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि समूचे देश में एक ही कानून लागू होना चाहिए, किसी राज्य या धर्म सम्बंधी अलग मापदंड नहीं होने चाहिए। उन्होंने कहा कि वे इस सम्बंध में भारत के प्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री को पत्र लिख कर अपील कर रहे हैं।

पत्राचार कोर्स में से मैरिट में आये विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा

अमृतसर : २ मार्च। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान जत्थेदार अवतार सिंघ ने ऐलान किया है कि धर्म प्रचार कमेटी (शि: गु: प्र: कमेटी) की तरफ से सिक्ख धर्म की प्रारंभिक जानकारी घर बैठे नौकरी, व्यवसाय या पढ़ाई आदि के साथ भी प्राप्त कर सकने के लिए आरंभ किये 'दो साला सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स' के दूसरे वर्ष की परीक्षा में पहला, दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त करने तथा मैरिट में आने वाले विद्यार्थियों को विशेष रूप से सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि

पत्राचार कोर्स (पंजाबी और हिंदी भाषा) को देश भर के विभिन्न प्रांतों में विद्यार्थियों के अतिरिक्त वकीलों, डॉक्टरों, नौकरीपेशा, व्यापारी वर्ग और बुद्धिजीवी वर्ग से बड़ा सकारात्मक प्रतिउत्तर मिला है। उन्होंने कहा कि वर्ष २००८-०९ की परीक्षा में पहला, दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त करने वालों को छात्रवृत्ति (वजीफा) के तौर पर क्रमश: ७१००, ५१०० और ३१०० रुपये तथा मैरिट में आने वाले छात्रों को ११००-११०० रुपये प्रति छात्र एक विशेष समागम दौरान दिये जाएंगे।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने इस कोर्स की सफलता के लिए डॉ. जसबीर सिंघ साबर, डायरेक्टर पत्राचार कोर्स और उनके सटाफ को बधाई देते हुए कहा कि सिक्ख धर्म के हरेक पहलू के बारे में घर बैठे प्रमाणिक जानकारी बिना फीस के नि:शुल्क दी जाती है। यह कोर्स हरेक धर्म तथा वर्ग का जिज्ञासु कर सकता है। उन्होंने विश्व भर के समूह नानक नाम लेवा को अपील की कि वह पत्राचार कोर्स में दाखिला लेकर सिक्ख धर्म की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त करने का लाभ लें। इस अवसर पर सचिव स. दलमेघ सिंघ ने जानकारी देते हुए बताया कि पत्राचार कोर्स के दूसरे वर्ष (२००८-०९) का नतीजा शिरोमणि कमेटी के वैबसाईट ाााःसगपचःनइट से नतीजा देख सकते हैं।

ज्ञानी गुरबचन सिंघ तथा जत्थेदार अवतार सिंघ द्वारा नानकशाही कैलेंडर-५४२ रिलीज

अमृतसर : १४ मार्च। नानकशाही कैलेंडर अनुसार आज नये वर्ष के दिन श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने श्री अकाल तख्त साहिब से शोधा हुआ 'नानकशाही कैलेंडर' संवत् ५४२ रिलीज करते हुए सिक्ख संगत को नये वर्ष की मुबारकबाद दी।

इस अवसर पर सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने श्री अकाल तख्त साहिब के सम्मुख जुड़ी संगत को संबोधित करते हुए अपील की कि वे गुरु साहिबान के गुरुपर्व और ऐतिहासिक दिवस शोधे हुए नानकशाही कैलेंडर के अनुसार मनायें और अपने सामाजिक कार-व्यवहार भी नानकशाही कैलेंडर के अनुसार ही करें। उन्होंने कहा कि कैलेंडर में किये गए संशोधनों के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी पर्व ज्येष्ठ सुदी चतुर्थ, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का आगमन पर्व पौष सुदी सप्तम, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ज्योति जोति पर्व कार्तिक सुदी पंचमी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का गुरतागद्दी पर्व कार्तिक सुदी दूज को मनाये जाएंगे और महीने की आरंभता (संक्रातियां/संग्रादें) पुरातन अनुसार ही होंगी।

कैलेंडर रिलीज करने से पहले शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के प्रधान जत्थेदार अवतार सिंघ ने संगत को संबोधित करते हुए कहा कि श्री अकाल तख्त साहिब के आदेशों के अनुसार नानकशाही कैलेंडर में संशोधन किये जाने पर पंथ में पड़ी दुविधा तथा दूरियां समाप्त होंगी और पंथ में एकजुटता होगी। उन्होंने कहा कि शिरोमणि कमेटी की ओर से सिक्ख जगत के महान जरनैल तथा पहले सिक्ख बादशाह बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा की गई महान प्राप्ति का प्रतीक 'सरहिंद फतह दिवस' की इसी वर्ष मनाई जा रही तीसरी शताब्दी को समर्पित नानकशाही कैलेंडर पर बाबा बंदा सिंघ जी बहादर जी का चित्र प्रकाशित किया गया है। उन्होंने कहा कि कैलेंडर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी की वैबसाईट **www.sgpc.net** पर भी उपलब्ध है। इस अवसर पर शिरोमणि कमेटी के उच्चाधिकारी तथा भारी संख्या में संगत उपस्थित थी।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०४-२०१०